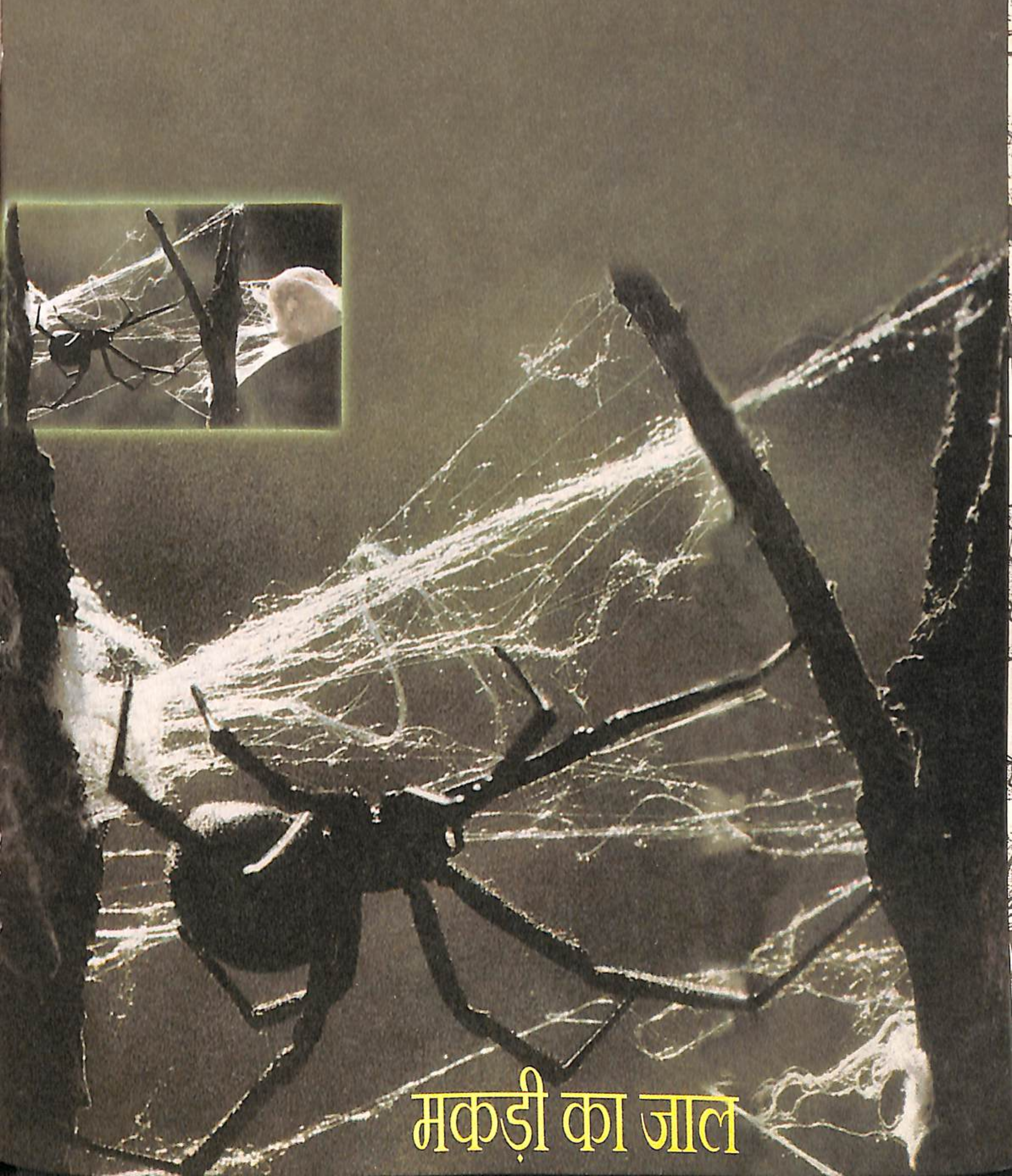
चकमक

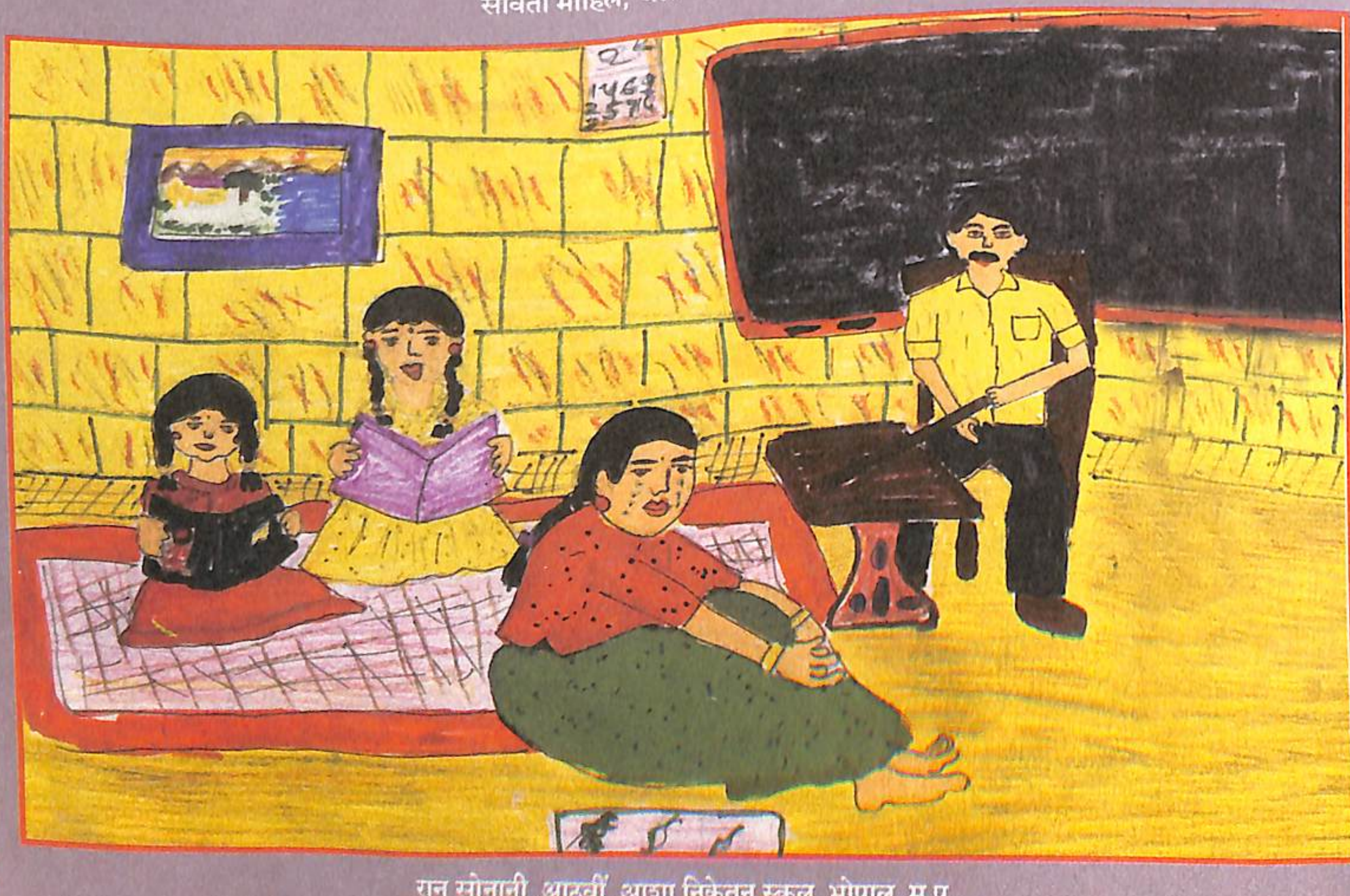
फरवरी, 2004 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00



मकड़ी का जाल



सविता मोहिल, चलाना, हिमाचल प्रदेश



रानू सोनानी, आठवीं, आशा निकेतन स्कूल, भोपाल, म.प्र.



एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-8 फरवरी 2004

क्या-क्या है इस अंक में



एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

बार बार ऐसा होता है जब हमें कोई चीज़ पसंद नहीं होती। ऐसा घर में भी होता है और घर से बाहर भी। चीज़ें भी कई हो सकती हैं। कभी स्कूल में टीचर या घर के बड़ों के हाथों पिटाई या डाँट बहुत बुरी लगती है। तो कभी अपने ही दोस्त या किसी और व्यक्ति का व्यवहार। जैसे खेलते समय किसी दोस्त ने कहा कि वो रन आउट नहीं है। पर बाकी सबको लगता है कि वो रन आउट है तो.... तुम्हें बुरा लगता है, तुम समझाने की कोशिश करते हो। और विरोध भी दर्ज करते हो। है न! घर के बड़े या टीचर भी कई बार कुछ ऐसा ही करते हैं। क्या हमें उनका विरोध करना चाहिए? क्या तुमने कभी घर या स्कूल में किसी बात पर विरोध जताया है? क्या विरोध जताए बगैर इन चीज़ों के ठीक होने की सम्भावना रहती है?

तुमने सुना होगा... लोग कहते हैं *अरे यार! फलाँ चीज़ हो गई पर क्या करें। फलाँ से हम क्या कह सकते हैं।* और चीज़ें ऐसी ही बनी रहती हैं। इस बार चकमक चर्चा के दौरान कई बच्चों से बात हुई। विषय था पिटाई। बच्चों ने स्वीकारा कि कई बार वे बेवजह पिटे। अभी भी पिट रहे हैं। पर क्या करें? अगर टीचर से कुछ कहा तो फिर पिटाई हो जाएगी। यही हाल घर का है। घर और स्कूल में उन बच्चों को अच्छा समझा जाता है, जो चुपचाप सब सहते रहते हैं। जवाब नहीं देते हैं। कल के बच्चे उर्फ आज के बड़े वैसे ही चुप हैं, जैसे टीचर या घर के किसी बड़े के सामने चुपचाप सब सहते रहते थे। क्या स्कूल से निकला एक चुपचाप रहने वाला बच्चा एक दब्बू बड़ा नहीं बनेगा? तुम्हें क्या लगता है?

उम्मीद है तुम किसी बात को केवल इसलिए स्वीकार नहीं करोगे कि वह बड़ों ने कही है। उस पर सवाल उठाओगे? उस बात पर तुम खुद क्या सोचते–समझते हो, यह बताओगे, अपनी पसंद या नापसंदगी ज़रूर दर्ज करोगे।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-8 फरवरी 2004

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

सहयोग
कविता सुरेश
राकेश खत्री
शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/ एच आई जी – 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल – 462 016 (म. प्र.)
फोन : 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



बारह मास

जनवरी में है, सरदी भाती
फरवरी में वह दौड़ी जाती
इतने में पतझड़ आ जाता
तभी मार्च है बिगुल बजाता।

फिर अप्रैल है गाता आता
फलों से है जग लद जाता
मई हुआ तो चले बवंडर
तपती धरती तपता अम्बर

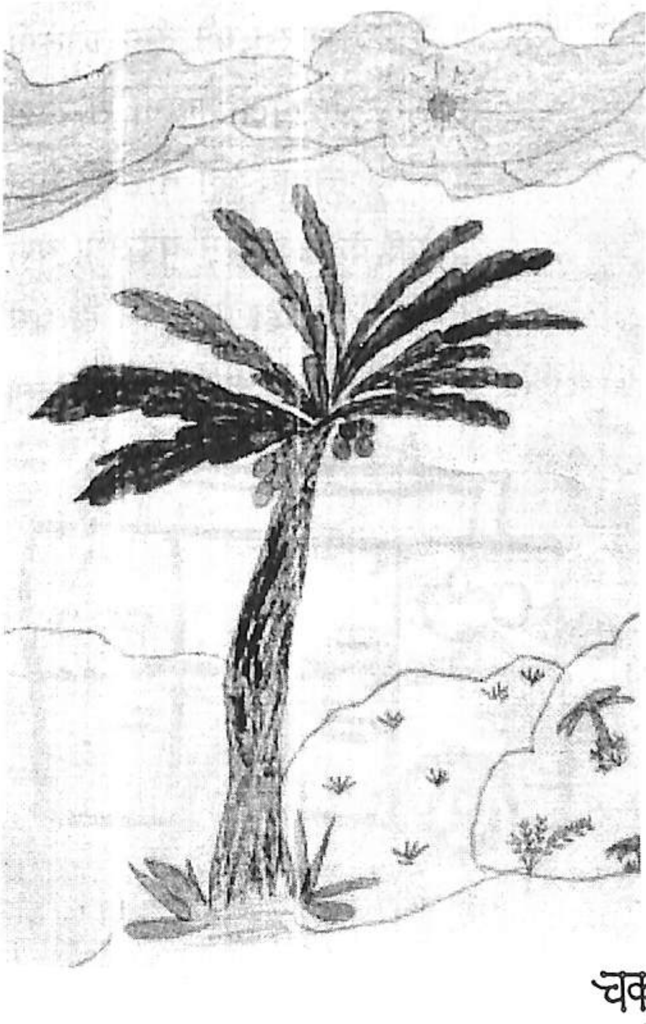
चढ़ा जून तो बढ़े बवंडर
सबको बाहर चैन न अंदर
हुआ जुलाई वर्षा वाला
बादल ने जब छींटा डाला

अगस्त में यूँ बारिश आती
रिमझिम-रिमझिम गाने गाती
तभी सितम्बर प्यारा आया
बहार को वह साथ में लाया

अक्टूबर भी मन को भाता
ता-ता थैया नाच दिखाता
गया अक्टूबर हुआ नवम्बर
झटपट आया भला दिसम्बर

ये ही कहलाते बारह मास
ना तुम होना इसमें उदास।

● अमिता मंचाली, हुबली, पश्चिम बंगाल



● रानू चौरे, नौवीं, होशंगाबाद, म.प्र.

मेरा पन्ना

जीतेगी भई जीतेगी

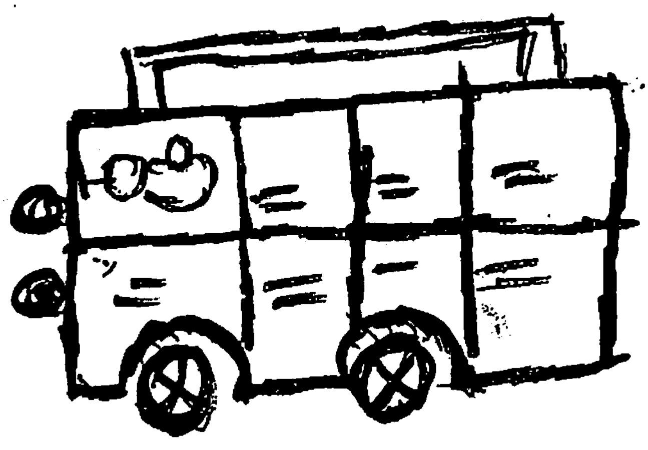
जीतेगी भई जीतेगी
भारत की टीम जीतेगी
देश की प्यारी ज़ीतेगी
सचिन के बल्ले से निकलेगी बाउंड्री
जल्दी ही बन जाएगी सैंचुरी
याद करेंगे गांगुली का छक्का
कुमले पकड़ेंगे कैच पर कैच
राहुल मारेंगे चौके-छक्के
रह जाएँगे दर्शक हक्के-बक्के
जीत की माला पहनाएगी जनता
जीतेगी भई जीतेगी
भारत की टीम जीतेगी
सभी देखेंगे खेल भावना से खेल
जातिवाद का न होगा मेल
खेल के मैदान में बरसेगा बस
प्रेम ही प्रेम, प्रेम ही प्रेम

● अनुज कौशल, दिल्ली

सबसे प्यारी मेरी दादी

सबसे प्यारी मेरी दादी,
खुशियों से भर दे वादी,
रोज़ सुनाए हमें कहानी
हो वो राजा या रानी
जब खेले हम छुपा-छुपी,
कान पकड़कर अंदर लाती
कहती पहले करो पढ़ाई
वरना होगी तुम्हारी पिटाई
जब हम अव्वल नम्बर लाते
खूब खिलाती हमें मिठाई
सबसे प्यारी मेरी दादी,
हाँ, सबसे प्यारी मेरी दादी।

● स्वाति परिहार, दसवीं, देवास, म. प्र.



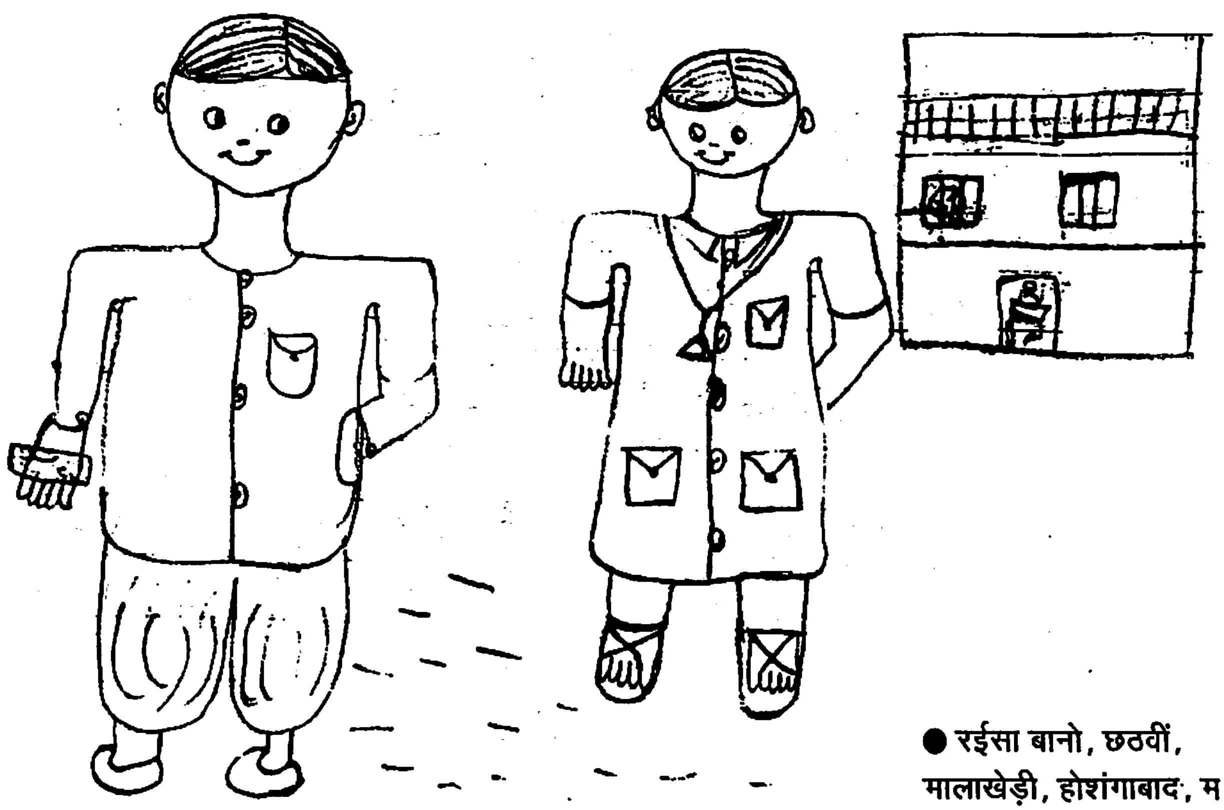
● संदीप राठौर, हरणगाँव, देवास, म. प्र.

शरारत

सोनू नाम का एक लड़का था। उसका तो काम ही था शरारत करना। वह दिन भर जानवरों तथा पशु-पक्षियों को सताता रहता था। उसके माता-पिता और शिक्षक उसे ऐसा करने से मना करते थे लेकिन वह किसी की बात पर ध्यान नहीं देता था।

एक बार उसने सुंदर-सी एक चिड़िया देखी तो गुलेल में एक बड़ा-सा पत्थर रखकर चिड़िया पर निशाना लगा दिया। चिड़िया तो उड़ गई। उसका पत्थर जाकर पेड़ की जिस डाली पर लगा, उस पर मधुमक्खियों का बड़ा छत्ता था। पत्थर लगते ही छत्ता टूट गया। मधुमक्खियाँ सोनू के पीछे लग गईं। मधुमक्खियों के काटने से सोनू का सारा चेहरा सूज गया। सोनू दर्द के मारे चीखने लगा। अब सोनू को अहसास हो रहा था कि दूसरों को परेशान करना ठीक नहीं।

● प्रतिभा सोलंकी, पाँचवीं, देवास, म. प्र.



● रईसा बानो, छठवीं, मालाखेड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

सब कुछ सत्य

मेरे जीवन में ऐसी बहुत सी घटनाएँ हैं जो सुनने के बाद आप बहुत हँसेंगे।

एक दिन मैं थाली पर बैठी थी। थाली पर से गिर जाने के कारण मेरा पाँव टूट गया। और एक महीना अस्पताल में रहना पड़ा।

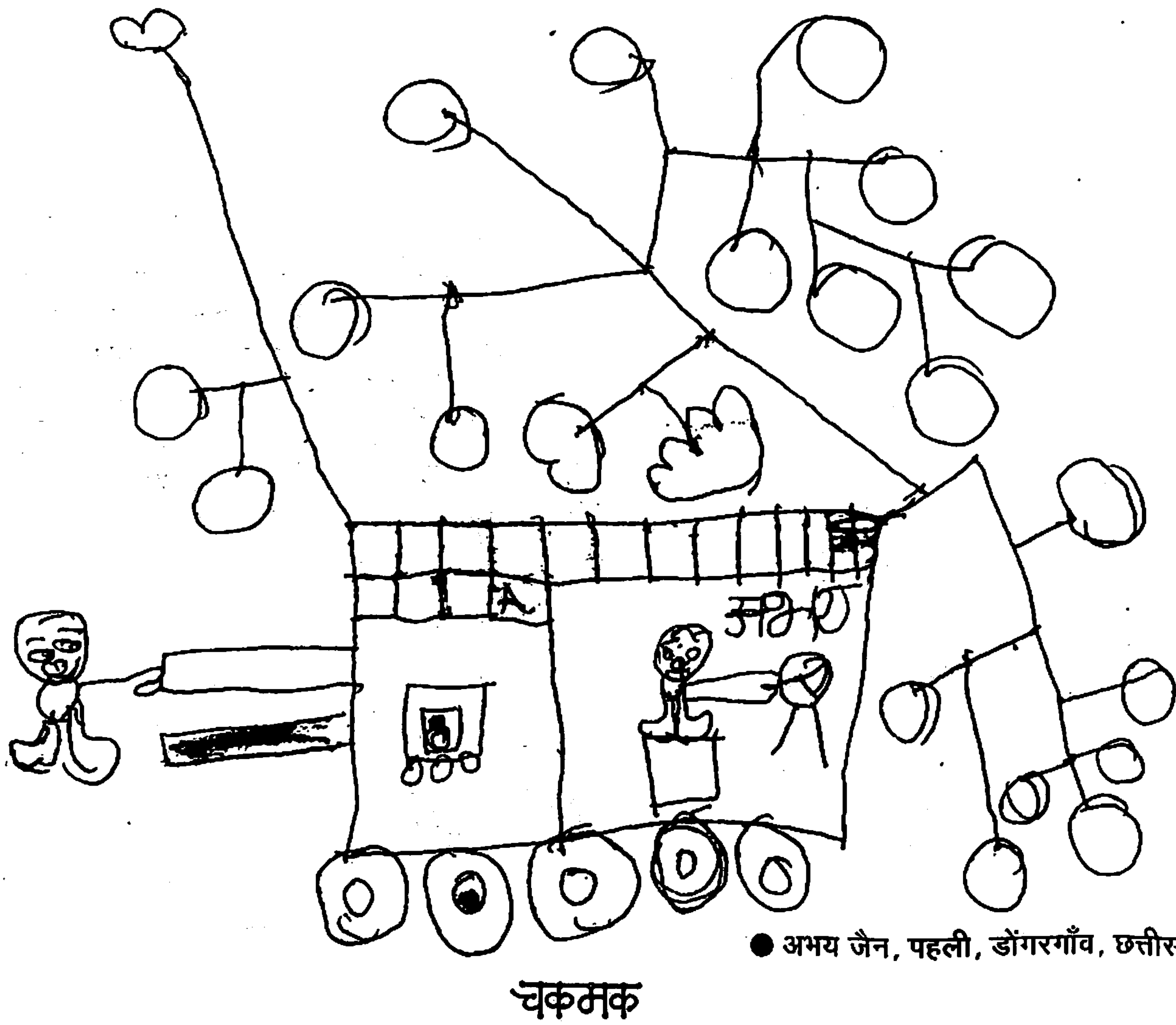
एक दिन मैं पतंग उड़ा रही थी। ज़ोर से हवा आई और मैं पतंग के साथ उड़ने लगी। इतने में एक पेड़ आया। मैंने पेड़ पकड़ लिया। और धीरे-धीरे नीचे उतरी।

एक दिन मैं बाज़ार जा रही थी। वहाँ रास्ते में एक ट्रक और जीप का एक्सीडेंट हो गया। पूछने पर पता चला कि ट्रक मकोड़ा चला रहा था। और जीप चींटी चला रही थी।

एक दिन मैं नदी के किनारे बैठी थी। मैंने देखा कि एक मुर्गे ने अंडा दिया और उसमें से चूज़ा निकला।

आपको लगता होगा कि यह सब असत्य है पर गप्प में सब कुछ सत्य है।

● अंकिता पंड्या, पादरा, बड़ौदा, गुजरात



● अभय जैन, पहली, डोंगरगाँव, छत्तीसगढ़

परीक्षा

नजदीक आई मेरी परीक्षा
पढ़ने की हुई मेरी इच्छा

मैंने डिस्क का काटा तार
कर दिए उसके टुकड़े चार

घर में मचा बड़ा बवाल
दीदी, भैया हुए बेहाल

इसने कोसा, उसने कोसा
जी भर के सबने कोसा।

थोड़ी देर में हुआ सब ठीक
अंत में हुई मेरी ही जीत

उठती रोज़ मैं चार बजे से
खेलती नहीं मैं कभी मज़े से

एक ऐसा भी दिन आया
मेरे सामने प्रश्न पत्र आया

उससे हुई मेरी हालत खस्ता
याद आया मुझे मेरा बस्ता

बस्ते में मुझे दिखी मेरी कॉपी
चलने लगी मेरी दिमागी फ़्लॉपी

मेरी फिक्र का हुआ अंत
जब मेरी परीक्षा हुई खत्म

फिर आया मेरा रिजल्ट
उसमें मैं आई नम्बर फर्स्ट

सबने किया मुझसे प्यार
फिर जोड़ा मैंने डिस्क का तार

● अनीता चौधरी, छठवीं, देवास, म. प्र.

सेब

मेरे घर एक सेब था
सेब बहुत खट्टा था
खट्टा-खट्टा सेब खाकर
हो गया मुँह खराब हमारा।

● प्रांजलि, चौथी (पता नहीं लिखा)



● अमन, के.जी.सेकंड
(पता नहीं लिखा)

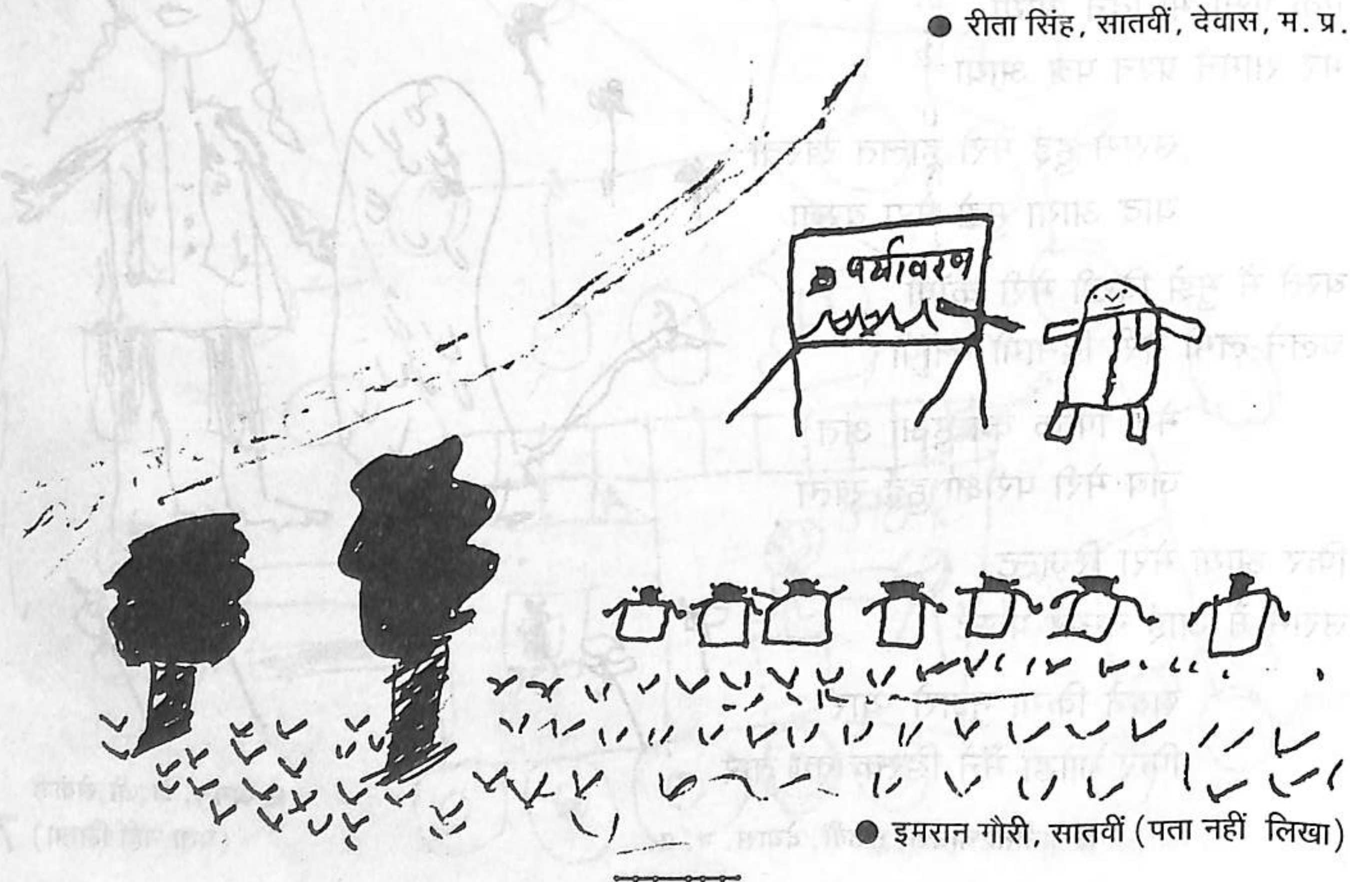
मेरी शाला

मेरी शाला बहुत है प्यारी
इसमें पढ़ती सखियाँ हमारी
मैडम से सब बच्चे डर जाएँ
जब वो क्लास के अंदर आएँ
जब उनको गुस्सा आता
एक-एक बच्चा पिट जाता
एक मैडम बहुत हैं अच्छी
मन की वो बहुत हैं सच्ची
मुझे लगती वो सबसे अच्छी
कहती तुम हो प्यारी बच्ची
ये बच्चों को पढ़ना सिखाएँ
इसीलिए तो मैडम कहलाएँ
मेरी शाला बहुत है प्यारी
सबसे अलग, सबसे न्यारी।

● रीता सिंह, सातवीं, देवास, म. प्र.



● अनीता, चौथी, (पता नहीं लिखा)



● इमरान गौरी, सातवीं (पता नहीं लिखा)

बच्चों की सरकार





अगर बन जाती दुनिया में
नन्हे बच्चों की सरकार
बड़ा मज़ा तब आता यारो
बच्चों का होता संसार।

ऊँचे-ऊँचे पद पर बच्चे
सभी नौकरी पाते
नहीं काम कुछ करना पड़ता
सभी खेलते खाते।



बड़े सयानों से मैं कहता
बच्चों को मत डाँटो
यह सरकारी ऑर्डर होता
मुफ्त मिठाई बाँटो।



सभा, सिनेमा, पिक्चर, नाटक
उस छोटे संसार के
बिना टिकट सब बच्चे जाते
बच्चों की सरकार के।

जो चाहे सो पढ़ने जाता
जो चाहे सो खेले खेल
किन्तु रहे इस दुनिया में
सदा सभी बच्चों में मेल।



- राजकुमार जैन 'राजन'

● चित्र - प्रीति पोद्दार



पिटाई



जब मुझसे कहा गया कि इस बार पिटाई पर चर्चा करना है तो तुरन्त ही मुझे अपने बेटे की बात याद आ गई। कई बार मैं भी उसकी पिटाई कर देता हूँ। कभी गलती पर और कई बार बिना गलती के भी...। उसने मेरा नाम सटासट वाले पापा रखा है। मुझसे कहता है, ''कोई आपका नाम पूछेगा तो कहूँगा सटासट वाले पापा।''

पिटाई पर बहुत सारे बच्चों से बात हुई। कभी बच्चे रहे बहुत सारे बड़ों से भी! लगभग सभी सहमत हैं कि पिटाई नहीं होना चाहिए। और पिटाई की जगह समझाने का तरीका अपनाना चाहिए। लेकिन हर बच्चे की कभी न कभी पिटाई ज़रूर हुई है। क्या तुम भी उन बच्चों में शामिल हो?

पिटाई के कारण इतने हैं कि बच्चों का उनसे पार पाना मुश्किल है। कभी अच्छी पढ़ाई के लिए, खराब रिज़ल्ट के लिए, काम न करने पर, अनुशासन के नाम पर... स्कूल में, घर पर, टीचर से, माँ से, पिता से, उस्ताद से....। आखिर बच्चे करें तो क्या करें, पिटना तो है ही।

आशा निकेतन स्कूल के एक शिक्षक भी मानते हैं कि बच्चों की पिटाई नहीं होना चाहिए। पर कभी-कभी वे भी पिटाई कर ही डालते हैं। वे खुद स्वीकारते हैं कि एक बच्चे को पीटने से पूरी कक्षा डर जाती है। और इसका असर अच्छा नहीं होता है। वे बताते हैं, *''मैं खुद पूरे स्कूली जीवन में दो बार पिटा। एक बार मैं कक्षा से बाहर खड़ा था। इतने में देखा हमारे स्कूल के एक पीटने वाले सर आ रहे हैं। उन्हें देखते ही मैंने दौड़ लगा दी। मैं इतना डरा हुआ था कि किसी दूसरी कक्षा में घुस गया। और इस तरह मेरी पिटाई हो गई।''*

उज्जैन का एक किस्सा है। वहाँ एक कानूनगो सर हैं। जब वे पचास-पचपन साल के रहे होंगे, तो स्कूल में उन्होंने एक बच्चे की पिटाई कर दी और कहा कि पिता को साथ लेकर आना। लड़के के पिता ने सुना तो बोले, ''कानूनगो सर ने मारा है तो सही बात पर ही मारा होगा। उन्होंने तो मुझे भी कई बार मारा था। उन्हीं के कारण तुम इस लायक हुए कि स्कूल जा सको। जाओ सर से माफी माँगकर आना।''

कभी कहावत थी कि 'छड़ी पड़े धम धम विद्या आए छम छम'। लोगों के विचार तो बदले हैं पर कितने? पिटाई बदस्तूर जारी है। क्या पिटाई के पीछे बच्चों की गलतियाँ ही रहती हैं?

ज़्यादातर बड़े मानते हैं कि पिटाई के पीछे कई बार उनकी परेशानी और तनाव भी होते हैं। जैसे कभी घर पर हुए झगड़े की वजह से स्कूल में बच्चों की बेवजह पिटाई कर दी। तो कभी ऑफिस के तनाव की वजह से घर पर बच्चों की पिटाई हो गई।





कई बड़ों ने माना कि पिटाई बच्चों की करते हैं पर लगती हमको ही है, जिसका अहसास हमें थोड़ी देर बाद होता है। अगर यह बात मान भी लें, तो क्या इससे बच्चों की परेशानियाँ या दुख कम हो जाते हैं। कुछ माँ-बाप बच्चों से माफी माँग लेते हैं। पर कई मानते हैं कि जो किया सही किया। अधिकतर मानते हैं कि पिटाई से समस्या हल नहीं हो सकती और बच्चों को पीटकर वो गलती करते हैं। फिर भी एक-दो ही बच्चे ऐसे मिले जिनसे माँ-बाप ने माफी माँगी हो। और टीचर माफी माँगे! ऐसा तो सोच ही नहीं सकते।

बातचीत के दौरान कई और बातें भी सामने आईं। जैसे एक बच्चे ने कहा कि सर जब मारते हैं तो बहुत बुरा लगता है। पर फिर भी मुझे हँसी आ जाती है। हँसी आने पर फिर मार पड़ती है। मैं फिर हँसता हूँ, वे फिर मारते हैं। अब मैं पिटने के बाद बाहर जाता हूँ और फिर हँसता हूँ। कुछ बच्चे ऐसे भी मज़े लेते हैं। वे पिटाई करने वाले टीचर का नामकरण कर देते हैं मसलन संटी वाला, गब्बर सिंह, कौआ, टकलू, कालीचरण बरेली से रिलीज़..। तुमने भी तो अपने टीचरों के ऐसे नाम रखे होंगे। टीचर को पता चले तो फिर वही पिटाई।

यह भी देखने में आया कि कभी न कभी सभी बच्चों की पिटाई हुई है। पर लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की पिटाई ज़्यादा होती है। क्या तुम्हें भी ऐसा लगता है?

बच्चे हर उस बात पर पिट सकते हैं जो माँ-बाप को बुरी लगती है। यहाँ तक कि अपने किसी साथी से पिटकर आने पर भी बच्चों की पिटाई हो जाती है। यानी पिटकर क्यों आए, मारकर क्यों नहीं? पिटाई करके आए बच्चे को घर पर शायद शह मिलती है। अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि ऐसे बच्चों के बड़े होकर कैसा बनने की सम्भावना होगी।

हमने लगभग अस्सी बच्चों से बात की। इनमें से सिर्फ एक लड़की ने कहा कि उसकी आज तक पिटाई नहीं हुई है। बच्चों ने भी माना कि वो कभी-कभार अपने छोटे भाई-बहन को पीट देते हैं। ऐसे तो पिटाई के लिए किसी कारण की ज़रूरत ही नहीं होती। पर फिर भी बातचीत में यह बात सामने आई कि लड़कों की पिटाई अक्सर पढ़ाई के कारण होती है जबकि लड़कियों की पिटाई घरेलू काम न कर पाने के कारण होती है। एकाध बार झूठ बोलने के कारण भी पिटाई हुई। ऐसे तो ज़्यादा पिटाई करने वाले टीचर कक्षा के कुछ ही बच्चों को पीटते हैं पर उनका डर स्कूल के सभी बच्चों पर छाया रहता है। इस डर के साथ बच्चा स्कूल में कितना सहज रह पाता होगा, कितना बेझिझक होकर बोल पाता होगा.... टीचर जाने!

क्या ऐसे माहौल में बड़े हो रहे बच्चों की दब्बू बड़ों में तब्दील होने की सम्भावना नहीं बनी रहती है। घर के गुस्सैल व्यक्ति घर के ही दूसरे बड़ों की पिटाई भी करते हैं। उनका इस तरह के बड़े में तब्दील होने के पीछे शायद बचपन की यही पिटाई हो!



●मनोज निगम

पिटाई के बारे में

क्या सोचते हैं बच्चे

पापा ने सॉरी कहा

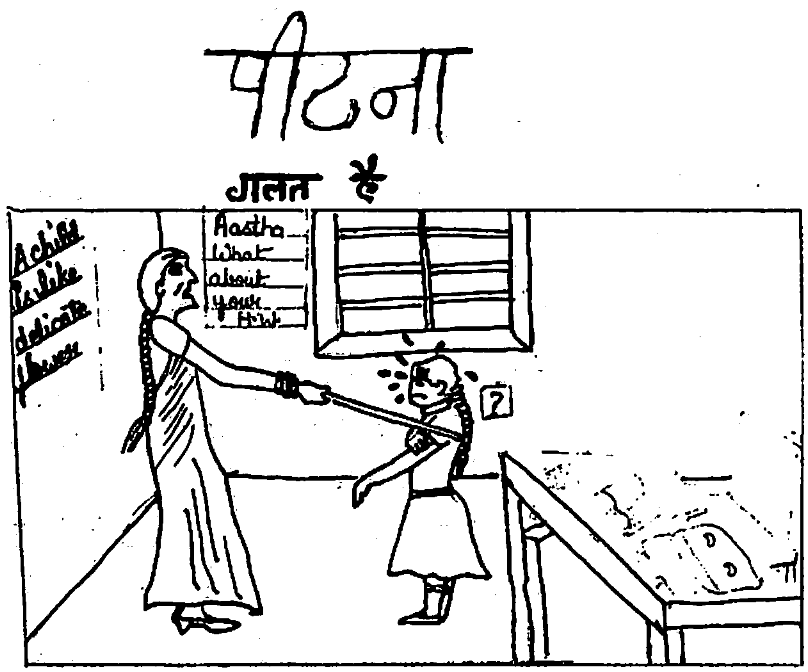
एक बार पापा ने मुझे चावल लेने के लिए बुलाया था। लेकिन यह नहीं बताया कि कितने बजे आना है। मैं समय पूछने वाली थी कि मेरे पापा चले गए। जब मैं शाम को चावल लेने गई तो पापा वहाँ नहीं थे। मैंने बहुत देर तक इन्तजार किया। लेकिन वह नहीं आए। जब वह काम से वापिस आए तो उन्होंने मुझे मारा। उसके बाद मैंने खाना नहीं खाया। तो रात को मेरे पापा ने सॉरी कहकर मुझे खाना खिलाया।

ऋतुकला साहू, सातवीं, ओल्ड कैम्पियन स्कूल भोपाल, म.प्र.

मुझे लगा सही हैं

एक बार जब मैं कुरान पढ़ने गया तो मैंने कुछ आयतें गलत बोल दीं। मुझे लगा वो सही हैं। तो मेरे पिताजी को बुलाया। फिर वो आयतें कुरान से मिलाकर देखीं। मैं आयतें गलत पढ़ रहा था। इस पर मेरी पिटाई हो गई।

मो. रफीक (एक कामकाजी बच्चा)



सदफ अब्दुल्ला

हमें बुरा लगा

एक बार परीक्षा चल रही थी। एक प्रश्न था कि दस पैरों वाले जीवों के नाम बताओ? किसी को उत्तर मालूम नहीं था। बस एक लड़के को मालूम था। एक बच्चा जो उसके बगल में बैठा था उसने उस लड़के की कॉपी में झाँका। उस बच्चे ने टीचर से कहा। टीचर ने झाँकने वाले लड़के की कॉपी लेकर फाड़ दी। और बच्चे को बाहर निकाल दिया। वह रोने लगा। हमें बहुत बुरा लगा।

सुधीर सेन, सातवीं, ओल्ड कैम्पियन स्कूल, भोपाल, म.प्र.



नीलम रैकवार, सातवीं, ओल्ड कैम्पियन स्कूल, भोपाल, म.प्र.

कम से कम पूछो तो

जब मैं छोटी थी बिस्तर गीला करने के कारण रोज़ मेरी पिटाई होती थी। जब स्कूल आई तो यहाँ भी मेरी पिटाई होती। एक दिन मेरे साथियों ने मुझे खूब समझाया। उसके बाद कभी वैसा नहीं हुआ। अगर मम्मी पापा भी मुझे मेरे साथियों जैसे समझाते तो शायद यह समस्या पहले ही दूर हो जाती। मुझे पिटाई तब और बुरी लगती है जब बिना कुछ पूछे या जाने कि कोई गलती हमसे क्यों हुई, बड़े पीटना शुरू कर देते हैं। कम से कम पूछो तो कि वो गलती हमसे जानबूझकर हुई या गलती से हुई।

ममता पांचाल, आठवीं, आशा निकेतन स्कूल, भोपाल, म.प्र.

पहले समझाना चाहिए

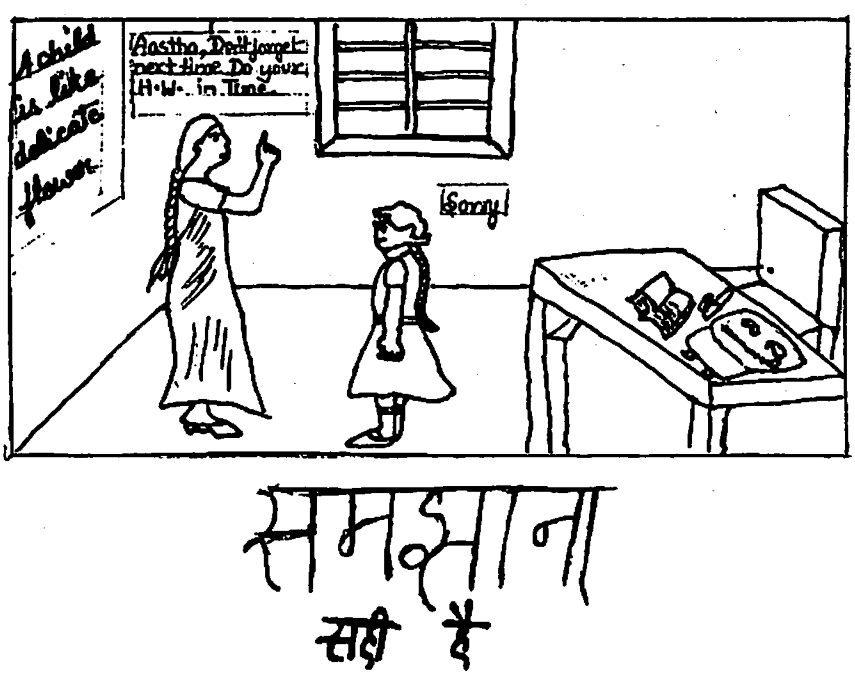
घर में झाड़ू आदि काम न करने के कारण मेरी पिटाई होती थी। पर बाद में मैं समझदार हो गई। काम करने लगी। तब पिटाई बन्द हो गई। पिटाई से अच्छा है कि पहले समझाना चाहिए।

सुनिति चौहान, आठवीं, आशा निकेतन स्कूल, भोपाल, म.प्र.

मैं बड़ा हो गया

हमारे स्कूल में तो स्केल से पिटाई होती है। छोटे बच्चों की आड़े स्केल से और बड़े बच्चों की खड़े स्केल से। अब मेरी खड़े स्केल से पिटाई होने लगी है, मैं बड़ा हो गया हूँ।

सुमित राजपूत, तीसरी, ढाँवाकलाँ, होशंगाबाद, म.प्र.

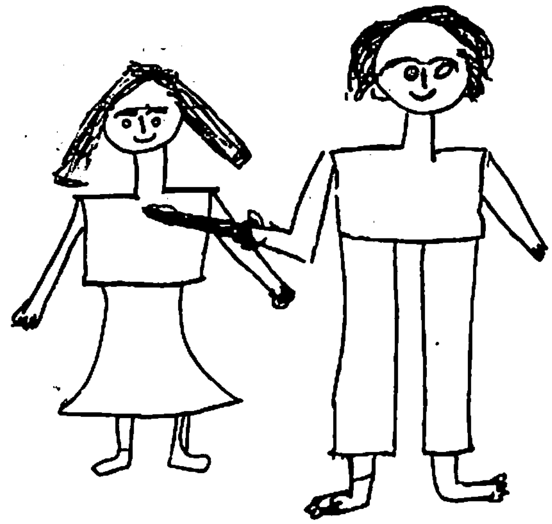


सदफ अब्दुल्ला, छठवीं, केंद्रीय विद्यालय, भोपाल, म.प्र.

ये तो ठीक नहीं

एक व्यक्ति हैं वो हमेशा साफ-सफाई पर गुस्सा करती हैं। हमें भी कभी-कभी लगता है हमने फलाँ काम में सुस्ती दिखाई पर इसके लिए डाँट या पिटाई क्यों। अब जब वो ऐसा करती हैं तो हम काम नहीं करते, अगर प्यार से कहेंगी तो करेंगे। अगर उनकी बात मान लो तो वो बहुत खुश हो जाती हैं। पर अगर वैसा नहीं किया तो नाराज़। ये तो ठीक नहीं है।

राजुल लकड़ा, आशा निकेतन स्कूल, भोपाल, म.प्र.



मैंने उसे समझाया

मुझे बहुत गुस्सा आता है जब कोई टीचर बेकसूर मेरी पिटाई कर देता है। पहले तो जिसे भी देखो मुझे आलसी कहता था। बतौलेबाज कहता था। मैं तब बहुत बात करता था। उन दिनों मुझे लगता था कि बात करना कोई गलती तो नहीं है। इसके लिए डाँट या मार-पिटाई होती तो बहुत बुरा लगता था।

....मुझे प्रणीत की देखभाल भी करनी होती है। पहले वो रोज़ अपनी ड्रेस इधर उधर फेंककर गन्दी कर देता और मैं रोज़ उसकी पिटाई करता था। एक दिन वो तेज़ तेज़ रोने लगा। मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने कान पकड़कर माफी माँगी। बोला तुम्हें जो करना है करो। मैं कुछ नहीं कहूँगा। उस दिन मैंने उसे प्यार से समझाया। अगले दिन उसने अपने कपड़े अलमारी में रखे।

अमित जायसवाल, आशा निकेतन स्कूल, भोपाल, म.प्र.

गलती मेरी नहीं थी

एक दिन अचानक मेडम ने मेरी पिटाई कर दी। बाद में मुझे मालूम हुआ कि पिटाई क्यों हुई। हुआ ये था कि कुछ बच्चे मुझसे खेलने के लिए फुटबाल लेकर गए थे। खेलते हुए एक बार फुटबाल मेडम को जाकर लग गई। बस मेडम ने इतना पूछा, 'फुटबाल किसकी है।' लड़कों ने मेरा नाम लिया। और मेडम ने मेरी पिटाई कर दी। बाद में जब उन्हें पता चला कि गलती मेरी नहीं थी तो उन्होंने मुझे सॉरी कहा।

नीलम, सातवीं, ओल्ड कैम्पियन स्कूल, भोपाल, म.प्र.

पिटाई के बारे में तुम्हारे भी कुछ अनुभव होंगे। अपने अनुभव, अपनी राय तुम भी हमें लिखकर भेजना। अगले अंक में चकमक चर्चा के लिए विषय है 'परीक्षा'। इस पर भी अपने मन की बात लिखकर भेजना।

ठण्डा ठण्डा पानी

कहानी • रावेन्द्रकुमार 'रवि'   चित्र • शिवेन्द्र पांडिया




इतने में कोमल वहाँ पहुँची।
भैया!
हाथ धुलवा दीजिए!



होली

बाज़ार गली और कूचों में
जब शोर मचाया होली ने
सौ रंग भरे सौ रूप धरे
हर दिल को लुभाया होली ने

कुछ तबले खटके ताल बजी
कुछ ढोलक और मृदंग बजी
कुछ सारंगी और चंग बजी
कुछ तार तमूरों के झमके
कुछ घुंघरू खनके झनझन।

हर दम नाचने गाने का
ये तार बंधाया होली ने।
सौर रंग भरे सौ रूप धरे
हर दिल को लुभाया होली ने।

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका

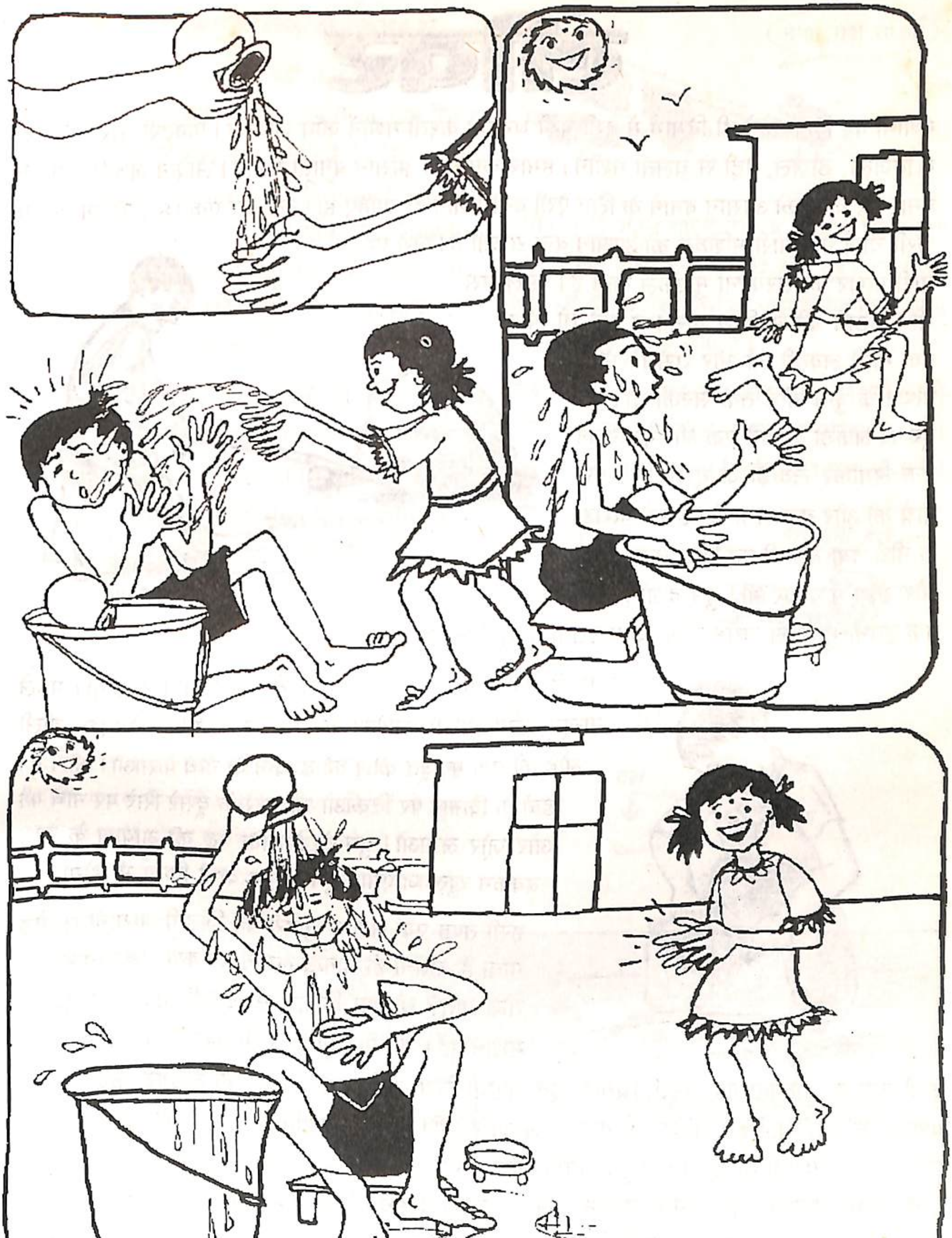
एकलव्य का प्रकाशन सम्पर्क : एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016

मार्च, 2004

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				



चित्र : अशोक चंचल


समाप्त.

लीवर

मशीनों का ज़िक्र होते ही दिमाग में बड़ी-बड़ी घर्र घर्र करती मशीनें कौंध जाती हैं। फैक्टरी, घरों, दफ्तरों में बिजली, डीज़ल, बैट्री से चलती मशीनें। हमारे कामों को आसान बनाती मशीनें। लेकिन ज़रूरी नहीं कि हमारे हर काम को आसान बनाने के लिए ऐसी बड़ी मशीनें ही चाहिए हों। कई बार एक छड़, पटिया, बल्ला जैसी चीज़ें भी हमारी मुश्किल को आसान बना सकती हैं। जैसे एक भारी पत्थर को सरकाना मुश्किल काम है। पहले उसे सीधे उठाने की कोशिश करो। न उठे तो फिर एक मोटी लकड़ी लो और उसे किसी तरह पत्थर के कुछ नीचे तक सरका दो। कुछ दूर पर लकड़ी के नीचे एक और पत्थर का टेक लगाकर लकड़ी के दूसरे सिरे पर नीचे की ओर बल लगाओ। इससे पत्थर के नीचे दबा लकड़ी का सिरा ऊपर उठेगा और साथ में पत्थर भी। तुम देखोगे कि अभी तक इतना मुश्किल लगने वाला काम इतनी आसानी से हो गया।





ऐसा ही एक काम है किसी बंद डिब्बे का ढक्कन खोलना। पहले नाखून, उँगलियों से कोशिश करो। न खुले तो फिर पैने सिरे वाली लोहे की एक मज़बूत कील को ढक्कन के नीचे फँसाओ। कील को डिब्बे के किनार पर टिकाओ और उसके दूसरे सिरे पर नीचे की ओर ज़ोर लगाओ। तुम देखोगे कि पट की आवाज़ के साथ ढक्कन खुल जाएगा। तुमने ऐसा कभी किया भी होगा।

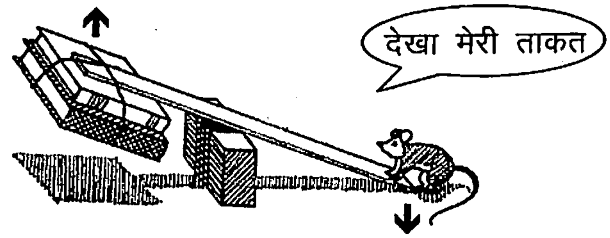
इसी तरह एक सरोता सुपारी को जितनी आसानी से तोड़ पाता है, उतनी ही ताकत लगाने पर क्या तुम्हारे हाथ उसे तोड़ पाते? तो इस हिसाब से लकड़ी, कील, सरोता भी मशीनें हुईं। जो ठीक भी है। ऐसी मशीनों के उदाहरणों की कमी नहीं है - क्रिकेट का बल्ला, चिमटा, इक पहिया ठेला, सुई, चाकू, झाडू, स्क्रू ड्राइवर, कैंची...। इन मशीनों का इस्तेमाल हम सदियों से करते चले आ रहे हैं। मिस्र में पिरामिड बनाने में भी फच्चर, ढलवाँ पटिया जैसी मशीनों का इस्तेमाल हुआ होगा। बड़े-बड़े पत्थरों को दूर से लाना और ऊपर तक ले जाना कोई आसान काम न था। इसी तरह रोम वाले भी युद्ध में दुश्मन को खदेड़ने के लिए गुलेल का इस्तेमाल करते थे। दरअसल गड़बड़ करती है मशीनों की हमारे मन में बनी तस्वीर। यही छवि हमें इन रोज़मर्रा के कामों में आने वाली चीज़ों में 'मशीनें' नहीं देखने देतीं। चलो ऐसी ही एक मशीन को विस्तार से देखते हैं।

शुरुआत भारी पत्थर सरकाने की समस्या से...

पत्थर सरकाने में काम आ रही लकड़ी एक लीवर की तरह काम करती है। इस लकड़ी के एक सिरे पर हम नीचे की ओर बल लगा रहे हैं। लीवर की तरह काम करने के कारण लकड़ी के दूसरे सिरे पर उल्टी दिशा में बल लगता है। चूँकि यह परिणामी बल हमारे द्वारा लगाए गए बल की तुलना में ज़्यादा होता है, इसलिए पत्थर को आसानी से खिसकाया जा सकता है।

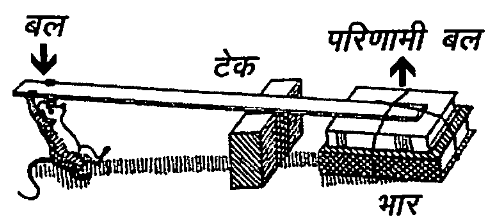
एक और उदाहरण। तुम कभी सी-सॉ पर बैठे हो? सी-सॉ में पटिये के एक तरफ तुम बैठते हो और दूसरी तरफ तुम्हारा दोस्त। पटिया बीच में किसी चीज़ पर टिका है। मान लो तुमने पैरों से ज़मीन को धकेला। इसमें जितना बल लगा उतना ही बल उल्टी दिशा में लगा। इस तरह तुम ऊपर हुए और तुम्हारा दोस्त नीचे। नीचे पहुँचकर जब दोस्त ने पैरों से ज़मीन को धक्का मारा तो वह फिर ऊपर हो गया और तुम नीचे।

पर ऐसा तो तब होगा जब तुम और दोस्त लगभग बराबर वज़न के होंगे। लेकिन इस सी-सॉ से तुम अपने से भारी दोस्त को भी उठा सकते हो। इसके लिए बस बैठने की जगह में कुछ बदलाव करने

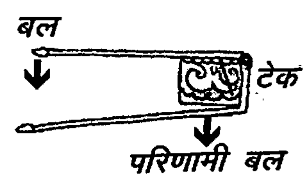


होंगे। भारी वज़न वाला टेक की तरफ खिसकेगा और हलका वाला टेक से कुछ और दूर। अगर तुम सोच रहे हो कि ऐसा क्यों तो ज़रा धीरज धरो। आगे इसका ज़िक्र किया गया है।

चलो पहले लीवर को ज़रा और समझ लें। लीवर में तीन चीज़ें होती हैं। बल, टेक और परिणामी बल। सी-सॉ वाले उदाहरण में स्थिति कुछ ऐसी होती है।

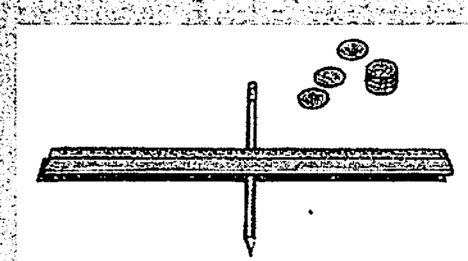


और सरोते में कुछ ऐसी -



कुछ करने के लिए

मेज़ या ज़मीन पर एक पेंसिल रखो। स्केल को पेंसिल पर संतुलित करो। स्केल पर संतुलन की जगह पर निशान लगा दो। ध्यान रहे कि स्केल इस निशान से सरके नहीं। स्केल के किसी एक तरफ पाँच का एक सिक्का रख दो। संतुलन बिगड़ गया न। अब दूसरी तरफ भी एक पाँच के सिक्के को इस तरह रखो कि स्केल फिर से संतुलन की स्थिति में आ जाए। दोनों सिक्के निशान से कितनी दूरी पर हैं?



क्या एक तरफ पाँच की जगह दो के सिक्के से भी संतुलन की स्थिति बन सकती है?

एक ज़रूरी बात। लीवर में टेक का महत्व तो है ही। इस बात का भी महत्व है कि टेक किस जगह पर है। फिर बल टेक से जितनी दूरी पर लगेगा, उसका प्रभाव उतना ज़्यादा होगा। यही कारण है कि लीवर की मदद से कम बल लगाकर काफी मुश्किल काम किए जा सकते हैं।

दूसरे शब्दों में लीवर एक आसान से सिद्धांत पर काम करते हैं। तुम लीवर के एक सिरे पर लगने वाले बल को टेक से उसकी दूरी से गुणा करो। फिर परिणामी बल को भी टेक से उसकी दूरी से गुणा करो। ये दोनों संख्याएँ बराबर होंगी। इस हिसाब से अगर कम बल को टेक से काफी दूर लगाया जाए तो टेक के पास रखा भारी वज़न आसानी से उठाया जा सकता है। अब तुम समझ गए होगे कि क्यों सी-सॉ में भारी दोस्त टेक के करीब खिसकेगा और हलका टेक से दूर।

ज़रूरी नहीं कि टेक हमेशा भार और बल के बीच में ही लगे। जैसे इक पहिया ठेले में होता है। इसमें एक तरफ पहिया (यानी टेक) होता है, बीच में सामान रखने की जगह (यानी भार) होती है और एक तरफ धकियाते यानी बल लगाते तुम होते हो।

हमारा रोज़मर्रा में इस्तेमाल होने वाला चिमटा भी एक लीवर है। इसमें एक ओर टेक है, बीच में हम

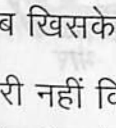


बल लगाते हैं और दूसरे सिरे पर परिणामी बल लगता है। इस तरह के लीवर में भारी वज़न उठाना प्रमुख बात नहीं होती। काम को किसी और तरह से आसान बनाना इनकी खासियत होती है। लीवर के इस तरह के उपयोग के बारे में हम अगले अंक में बात करेंगे।

अब तुम एक काम करो। अपने आसपास सरल लीवर के और उदाहरण ढूँढो। उनसे कुछ काम करो या उन्हें काम करते हुए देखो। यह पहचानने की कोशिश करो कि उनमें टेक कहाँ हैं, बल कहाँ लगाया जाता है और परिणामी बल कहाँ लगता है। और अगर कुछ समझ न आए तो चकमक के पते पर एक चिट्ठी डाल देना।

प्रस्तुति : शशि सबलोक
सभी चित्र : संतोष श्रीवास्तव

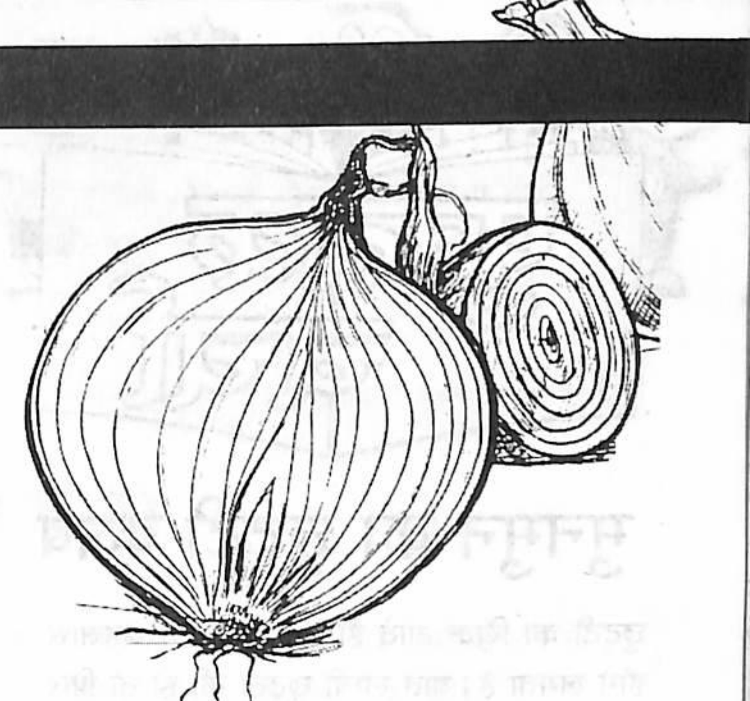
माथापच्ची जनवरी 2004 के हल

1. चार लड्डू। दो लड्डू तो रखे ही हैं, बस दो लड्डू और रखने होंगे।
2. 
3. पंद्रह लाइनों की और ज़रूरत पड़ेगी। छह आड़ी और नौ खड़ी लाइनों से सौ खानों वाली एक आकृति बनाई जा सकती है।
4. अठारह फुट लम्बी

चित्र पहेली जनवरी 2004 के हल

म		सा	र	स		ता	रा	
क	हा	र		ह	ल		के	
ड़ी		थी		वा		फा	ट	क
	बॉ		ग	ग	न			बा
त	ल	वा	र		रे	ल	गा	ड़ी
रा			बा	लि	श		य	
जू	दे	व		खा		कं		गि
	ग		पा	व		ग	म	ला
	ची	ल		ट	ख	ना		स

कुछ प्रयोग प्याज के साथ

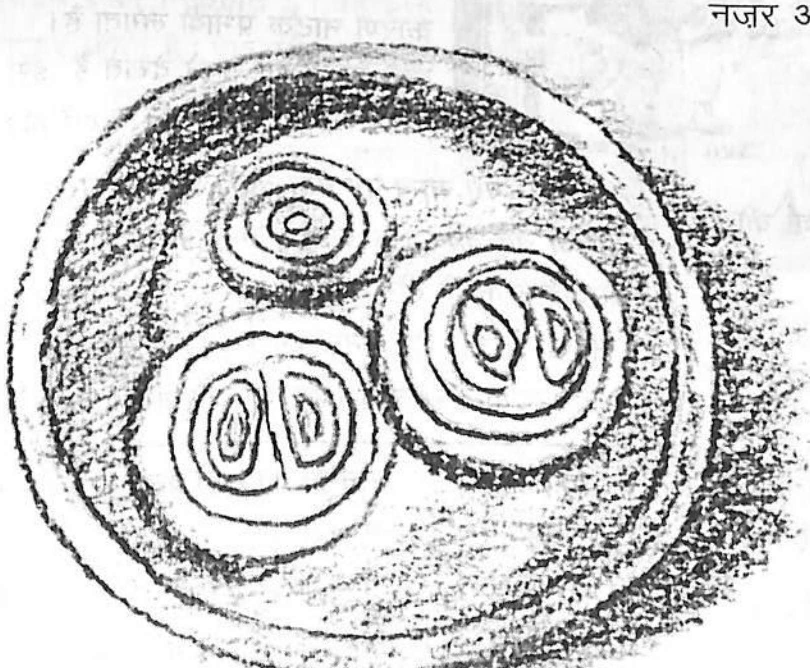


सब्ज़ी में एक स्वादिष्ट साथी का काम करती है प्याज! आज हम इसी प्याज को ज़रा गौर से देखते हैं। सामान कुछ ज़्यादा नहीं चाहिए – 2–3 प्याज, एक चाकू, एक तश्तरी और थोड़ा-सा पानी!

पहला काम है प्याज को आड़ा और खड़ा काटना। चाकू या छुरी का इस्तेमाल सम्भलकर करना।

प्याज को सीधा पकड़कर खड़ा काटने से हमें एक कली या फाँक के तरह की काट मिलेगी। इसमें केन्द्र से दोनों ओर जो धारियाँ हैं उन्हें गिनो।

अब एक और प्याज को खड़ा पकड़कर आड़ा काटो। इस बार तुम्हें ढेर सारे छल्ले वाले दो हिस्से मिलेंगे। इसके छल्ले गिनो।



चलो कुछ मज़ेदार करें। गोल कटे प्याज में से पतली-पतली 2-3 चकतियाँ काट लो। काटते समय सावधान रहना। अब एक तश्तरी या थाली में थोड़ा पानी डालकर इन चकतियों को उसमें रख दो। इसे घर में किसी ऐसी जगह 3–4 घण्टे के लिए रख दो जहाँ कोई इसे छेड़े नहीं।

तुम हर आधे घण्टे बाद एक बार प्याज को ध्यान से देख लेना। क्या इनमें कोई बदलाव होता नज़र आता है?

क्या 3–4 घण्टे बाद इनमें कोई फर्क आया? क्या? क्या तुम इस स्थिति का चित्र बना सकते हो? प्याज के टुकड़े ऐसे क्यों हो गए?

जो बदलाव तुम देख पा रहे हो, जो चित्र तुम बनाते हो और इसके कारण के बारे में जो कुछ तुम सोचते हो...... वह सब चकमक को चिट्ठी लिखकर बताना।

चित्र: संतोष श्रीवास्तव



मुनमुन का छुट्‌टी क्लब

छुट्‌टी का ज़िक्र आते ही मज़े-मौज का अहसास होने लगता है। बात लम्बी छुट्‌टी की हो तो फिर क्या कहने ! छुट्टियाँ मनाने का सबका अपना अन्दाज़ होता है। मुनमुन के छुट्‌टी क्लब किताब में कुछ बच्चों की छुट्‌टी के ऐसे ही आनन्द की बातें हैं। हमेशा ऐसा महसूस होता रहा कि बच्चों के लिए अच्छे नाटकों की कमी है। इसलिए जब नाटक की कोई किताब आती है तो उसे पढ़ने की हर किसी को उत्सुकता होती है। प्रकाश मनु की नाटक की किताब ***मुनमुन का छुट्टी क्लब*** भी हमने यही सोचकर पढ़ी। और पढ़कर सोचा कि तुमसे भी इस किताब के बारे में कुछ चर्चा की जाए।



मुनमुन का छुट्‌टी क्लब नामक इस किताब में छह नाटक हैं। इनमें मुनमुन का छुट्‌टी क्लब पहला है। इसमें मुनमुन, नेहा, गोपू और बजरंगी, इन चार बच्चों के बीच छुट्‌टी मनाने को लेकर हुई बातचीत पर आधारित संवाद हैं।

बजरंगी शरारती बच्चा है। वह गाँव में छुट्‌टी मनाने के लिए जाता है। गाँव में उसके साथ कई मज़ेदार घटनाएँ होती हैं। वह लौटकर अपने अनुभव साथियों को बताता है। छुट्‌टी मनाने के लिए बच्चे इस नाटक में कई योजनाएँ बनाते हैं। शोभा दीदी और विनायक दा सूत्रधार का काम करते हैं।

मुसीबत दीनू की इस संकलन का एक और मज़ेदार नाटक है। इस नाटक में दीनू एक नटखट और गप्पी लड़का है। इस कारण दीनू अपने साथियों के बीच हमेशा मज़ाक का विषय बन जाता है। उसके साथी उसकी बातों पर हँसते हैं। ऐसे में बोलने वाली चिड़िया उसकी मदद करती है। इस नाटक के संवादों में रोचकता है। दीनू की गप्पों में आपको भी मज़ा आएगा।

एक दूसरे नाटक ***सपनों का पेड़*** में मीरा, लतिका, नंदू और अविनाश चार बच्चे हैं। इन चारों बच्चों की रुचियाँ तथा स्वभाव अलग–अलग हैं। दादा जी इस कहानी के एक ऐसे पात्र हैं जो बच्चों को हर क्षण प्रोत्साहित करते हैं। इसमें कविताओं का अच्छा इस्तेमाल किया गया है। इस कारण नाटक प्रभावी लगता है। बच्चे क्या-क्या सपने देखते हैं, इस नाटक को पढ़कर जान सकते हो।

नए साल पर क्या क्या लाओगे, अजब छींक नंदू की तथा ***सांताक्लाज आया*** इस संकलन के ही तीन और नाटक हैं। इनमें कुछ संदेश, शिक्षा और मनोरंज़न है। इस किताब में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और डॉ. शेरजंग गर्ग की

किताब	मुनमुन का छुट्टी क्लब
लेखक	प्रकाश मनु
चित्रकार	नाम नहीं लिखा है
प्रकाशक	स्वास्तिक प्रकाशन, दिल्ली

कई कविताओं का इस्तेमाल किया गया है। कविताओं के कारण नाटकों में एक प्रवाह बनता है। लेकिन इस सबके बावजूद भी किताब में कहीं कहीं संवादों में अटपटापन महसूस हो सकता है। किताब में चित्रों का भी इस्तेमाल किया गया। परन्तु यदि चित्रों का और ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता तो किताब और आकर्षक होती। हॉ इस किताब की कीमत 125 रूपए है जो कि एक सामान्य पाठक के लिए ज़्यादा है यदि कीमत कम होती तो यह किताब और ज़्यादा लोगों तक इसकी पहूंच पाती।

● **समीक्षा : शिवनारायण गौर**

पाली का घोड़ा

काठी से बने घोड़े पर भला किसे झूलने का शौक नहीं होता। पर जब काठी का घोड़ा नहीं हो तो.....। तुम क्या करोगे! क्या खुद ऐसा घोड़ा तैयार करोगे या कुछ और..?

तुम्हारी ही तरह एक लड़की रहती है जिसका नाम है पाली! पाली को चिल्लर जमा करने का शौक होता है।

क्या तुम्हारे पास पैसे जोड़ने वाली गुल्लक है? जोड़ते–जोड़ते पाली एक दिन अपनी गुल्लक से सारे पैसे निकालती है। शायद कुछ खरीदने के लिए। गुल्लक में पचपन रुपए निकलते हैं। वह इन्हें लेकर बाज़ार जाती है। एक घोड़ा उसको जँच जाता है। वह उसका दाम पूछती है। दाम होता है तीन सौ रुपए। अब उसके पास तो कुल पचपन रुपए हैं, क्या करे।

वह चुपचाप घर आ जाती है। उसकी उदास सूरत देखकर उसके दादा उससे पूछते हैं....भई पाली क्या बात है.? वह पूरी बात बताती है।

दादाजी उसे एक तरकीब सुझाते हैं। इस तरकीब से वह खुश हो जाती है। तुम्हें अगर यह तरकीब भी बता दें तो किताब का पढ़ने का मज़ा ज़रा कम हो जाएगा। क्या पाली को वह घोड़ा मिला होगा? कैसे? यह सब जानने के लिए तो तुम्हें किताब पढ़ना पड़ेगा।

हाँ किताब के चित्र भी अच्छे हैं। यह किताब रंगीन है इसलिए चित्र देखने में और मजा आएगा।

पढ़कर हमें भी बताना, कैसी लगी ये किताब तुम्हें!

● **समीक्षा : चन्द्र प्रकाश कड़ा**



किताब	**पाली का घोड़ा**
लेखक	**मीनाक्षी स्वामी**
चित्रकार	**सुधीर जे. कुमार**
प्रकाशक	**यूनीसेफ**

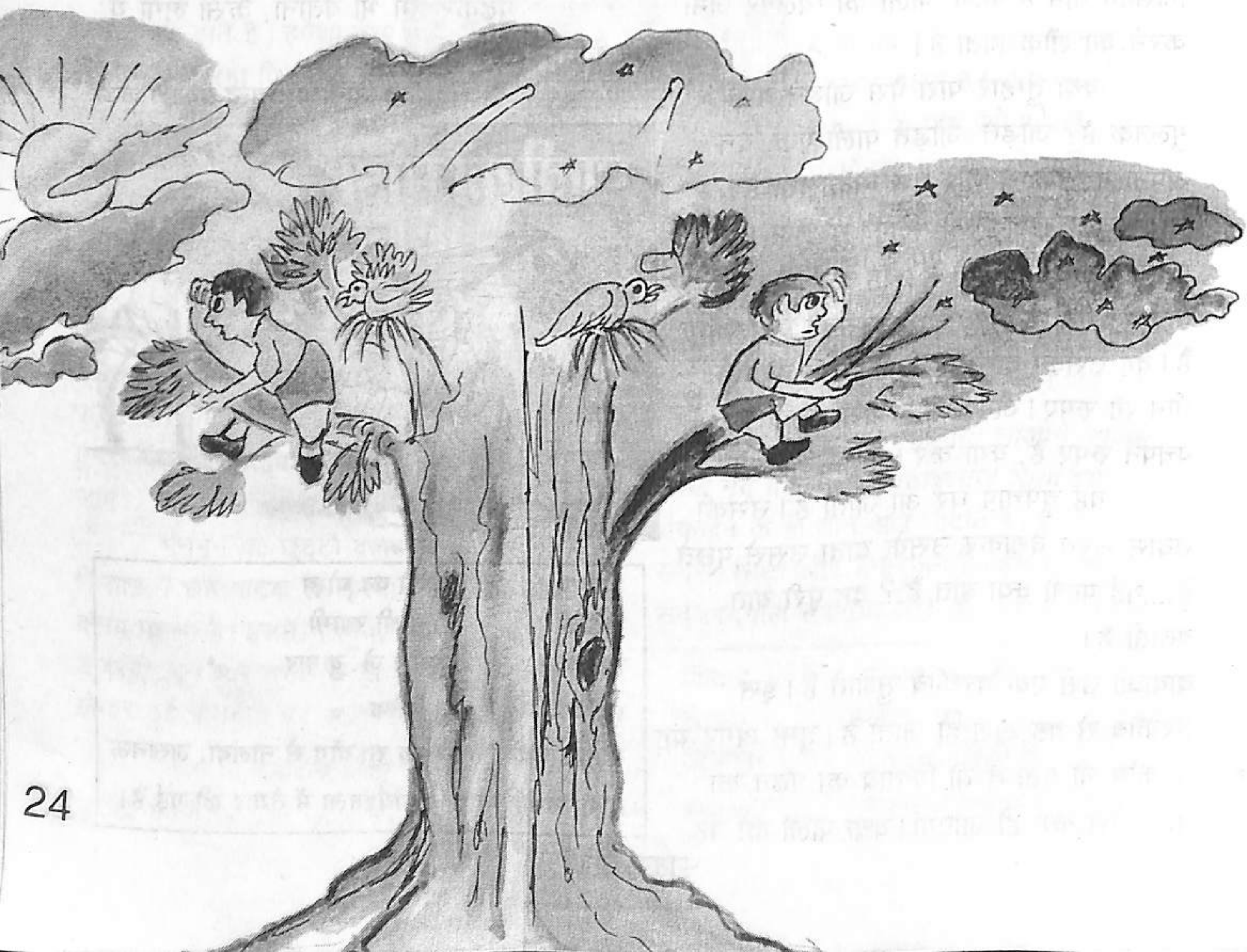
यह किताब यूनीसेफ के सहयोग से नालंदा, लखनऊ द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में तैयार की गई है।

बण्टी की चिन्ता



सोच रहा बण्टी मन ही मन
कैसे हुआ अजूबा
सूरज पूरब से क्यों निकला
पश्चिम में क्यों डूबा

और दूसरी बात जो उसके
कभी समझ न आती
हँसिया जैसा कटा चाँद
बन जाता गोल चपाती





कभी रात अँधियारी रहती
और कभी उजियाली
कौन मनाता आसमान में
आए दिन दीवाली



काली काली भैंस क्यों आखिर
दूध न देती काला
इतना ढेर नदी के अन्दर
पानी किसने डाला

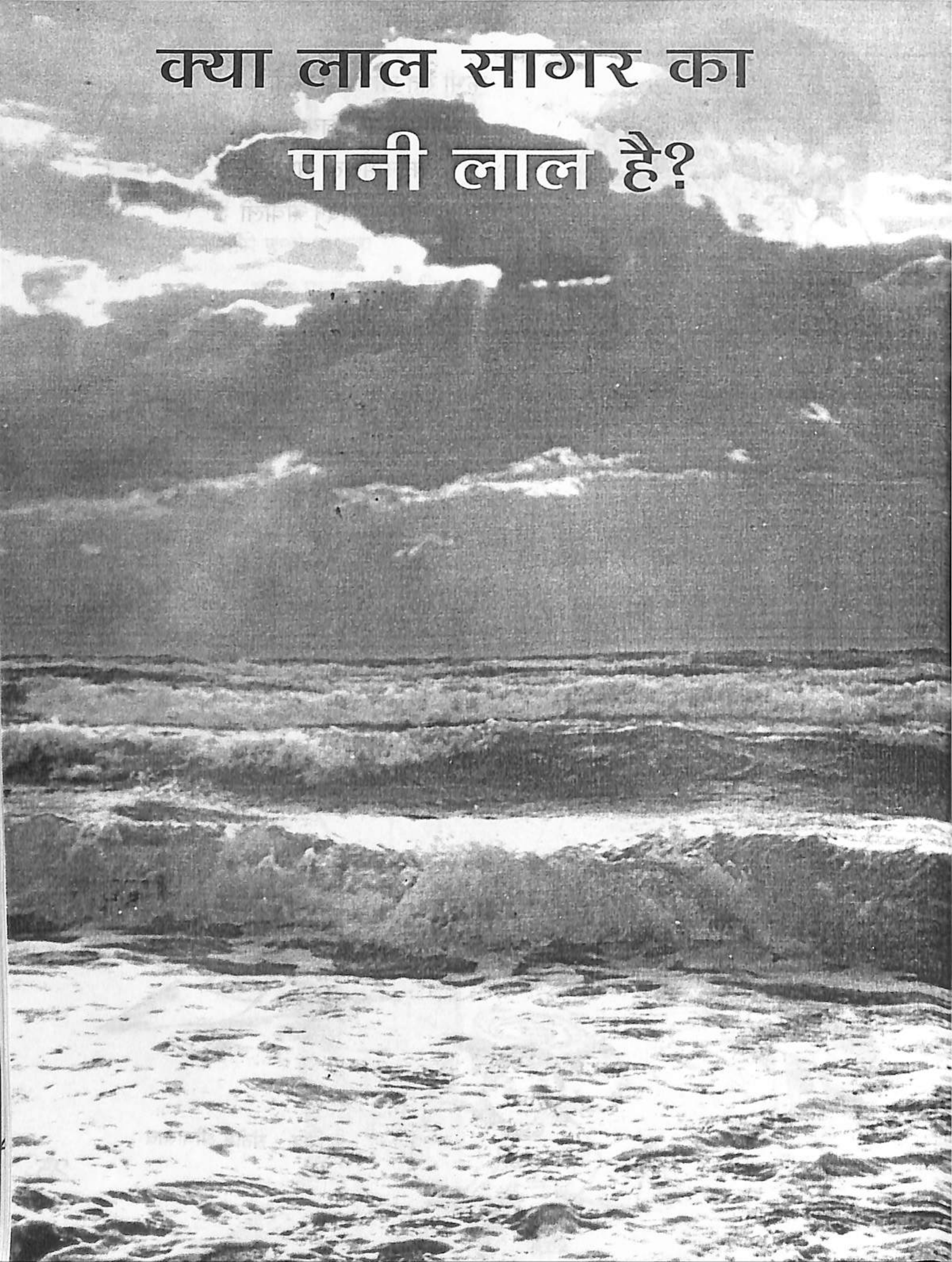
दादा दादी मम्मी पापा
सबसे उसने पूछा
कोई बता न पाया
कितना आसमान है ऊँचा

– अखिलेश श्रीवास्तव चमन



● चित्र – संतोष श्रीवास्तव

क्या लाल सागर का पानी लाल है?



तुमने कई समुद्रों और महासागरों के नाम सुने होंगे। दुनिया के इन महासागरों और समुद्रों के नाम कैसे पड़े, इस बारे में कई दिलचस्प कहानियाँ हैं।

यह तो तुम सभी जानते ही हो कि दुनिया में चार महासागर हैं – अटलांटिक, प्रशांत, हिंद और आर्कटिक महासागर। इनके अलावा कई सागर और कुछ छोटी-बड़ी खाड़ियाँ भी हैं।

हमारे देश के पश्चिम में अरब सागर है तो पूर्व में बंगाल की खाड़ी। दक्षिण की ओर हिंद महासागर है। हमारा देश दुनिया के जिस बड़े महाद्वीप के साथ जुड़ा है उसे कहते हैं एशिया। और, एशिया के पूर्व में प्रशांत महासागर फैला हुआ है।

प्रशांत महासागर का अंग्रेज़ी नाम स्पेनी भाषा के शब्द 'पेसिफिको' से 'पेसीफिक ओशन' रखा गया। इसका अर्थ है शांत। कहा जाता है कि बहुत पहले एक स्पेनी यात्री फर्डिनेंड मैगेलॉन जब यात्रा करते हुए इस क्षेत्र में पहुँचा तो उसने पाया कि यह समुद्र बहुत शांत है। बस उसका नाम हो गया प्रशांत महासागर। लेकिन ऐसा नहीं है कि यह हमेशा ही शांत रहता हो। यहाँ बड़े-बड़े तूफान भी आते हैं। हो सकता है कि जब मैगेलॉन ने उस पर यात्रा की तब यह शांत था।

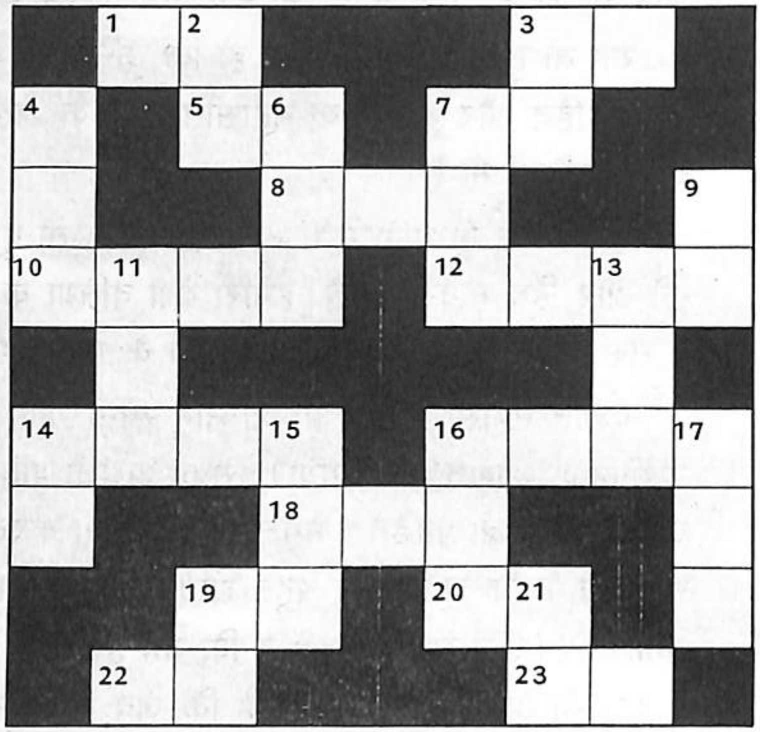
एशिया महाद्वीप के ही दो देश जॉर्डन और इज़राइल के बीच है मृत सागर (डेड सी)। बहुत पहले इस सागर में यात्रा करने वाले यात्रियों ने इसका यह नाम रखा होगा क्योंकि उन्होंने इस समुद्र के ऊपर किसी चिड़िया को उड़ते नहीं देखा। अब हम जानते हैं कि इस समुद्र में चिड़ियों के लिए खाने को कुछ नहीं है, मछलियाँ नहीं, पौधे भी बहुत ही कम। इसकी वजह है यहाँ के पानी में बहुत ज़्यादा नमक का होना।

एक और महाद्वीप है – अफ्रीका। अफ्रीका का पूर्वी तट लाल सागर और हिंद महासागर से तथा पश्चिमी तट अटलांटिक महासागर से घिरा है। अटलांटिक महासागर का नाम प्राचीन रोम से आया। बहुत पहले रोमन मानते थे कि अफ्रीका में एटलस पर्वतमाला दुनिया का आखिरी हिस्सा है, इसी पर्वतमाला के नाम से उन्होंने इसे अटलांटिक महासागर कहना शुरू किया।

एशिया और अफ्रीका के बीच में लाल सागर का नाम लाल सागर होने के भी कारण हैं – एक तो समुद्र के पास की पहाड़ियों का रंग लाल-सा दिखाई देना। दूसरा, लाल-भूरी काई जो गर्मियों में समुद्र की सतह पर उग आती है। इस कारण इसे लाल सागर कहा जाने लगा।

●●●

चित्र-पहेली



संकेत

1.



3.



5.



7.

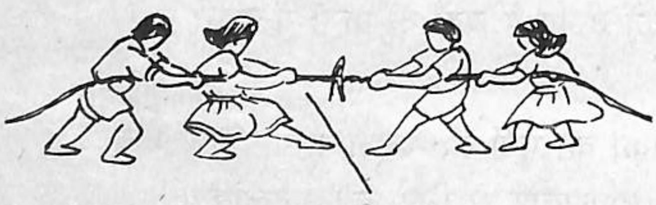


8.



10. पत्रिका, जिसमें तुम यह पहेली हल कर रहे हो

12.



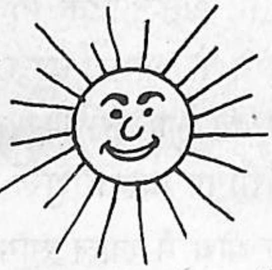
14.



16. एक त्यौहार जिस पर हम मीठी सिवैंयाँ खाते हैं

18. झूला झूलने के लिए एक शब्द।

20.



23.



19.

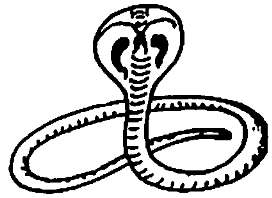


22.



संकेत

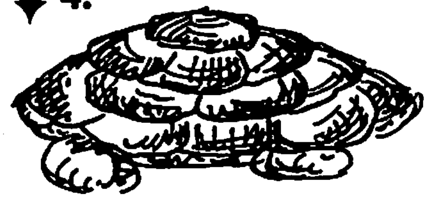
⬇2.



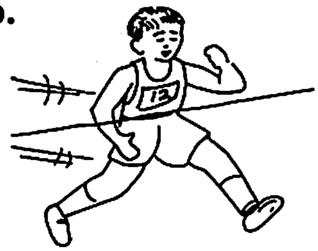
⬇3.



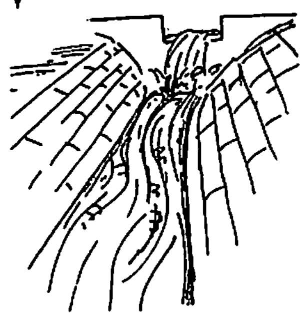
⬇4.



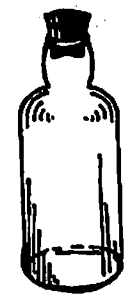
⬇6.



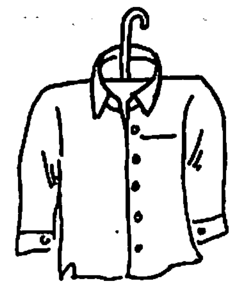
⬇7.



⬇9.



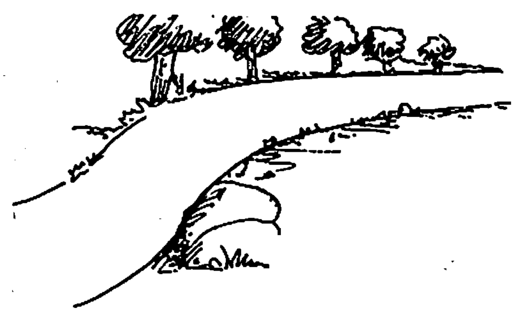
⬇11.



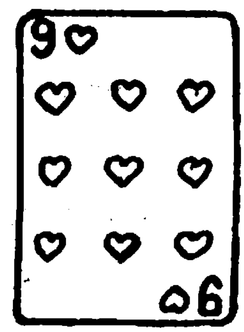
⬇13.



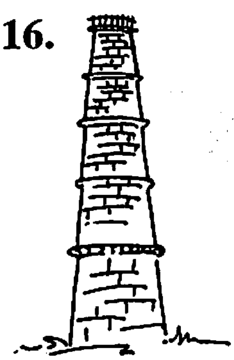
⬇14.



⬇15.



⬇16.



⬇17.



⬇19.



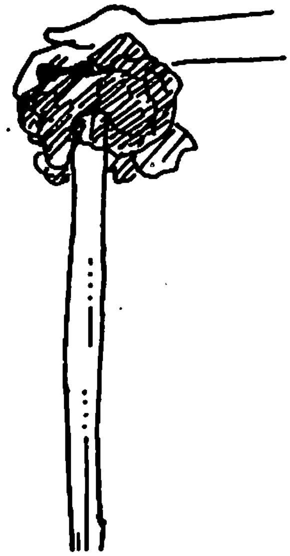
⬇21.



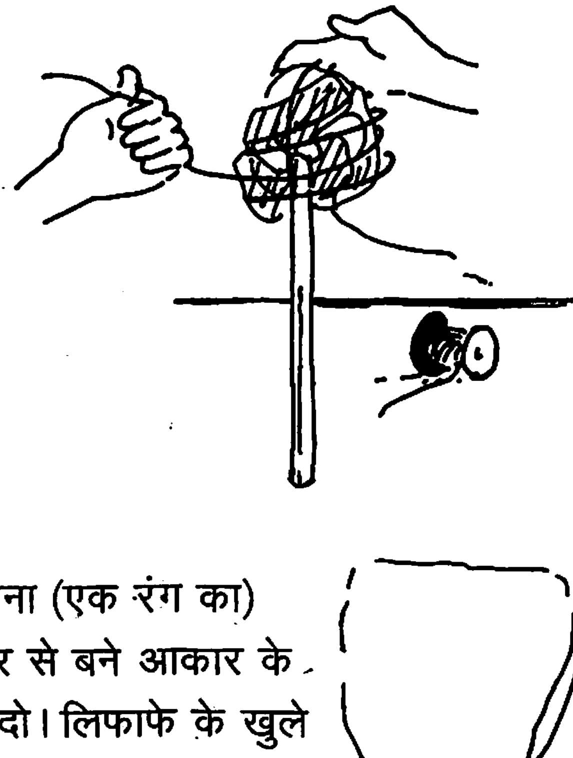
सभी चित्र : कैलाश दुबे

छड़ी पर पुतली

1. दो फुट लम्बी एक हल्की-सी छड़ी ले लो। छड़ी के एक सिरे पर पुराने अखबार के 7-8 पेज एक-एक करके लपेट दो।

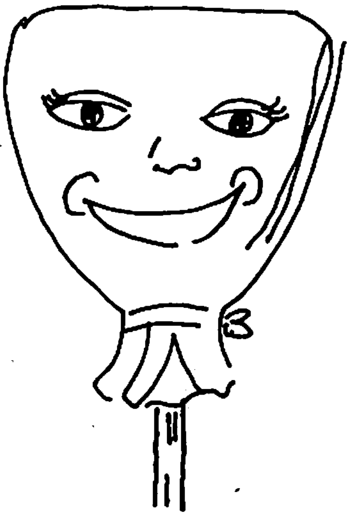


2. अच्छी तरह कसकर लपेटने के बाद उन्हें धागे से कसकर बाँध दो। इन कागज़ों को दबा-दबाकर सिर जैसा आकार दे दो।



3. अब कागज़ का बना (एक रंग का) लिफाफा लो। अखबार से बने आकार के ऊपर लिफाफा चढ़ा दो। लिफाफे के खुले सिरे को नीचे की ओर, एक साथ पकड़कर बाँध दो। अगर इतना बड़ा लिफाफा न मिले तो किसी भी एक रंग के कागज से लिफाफा बना लो।





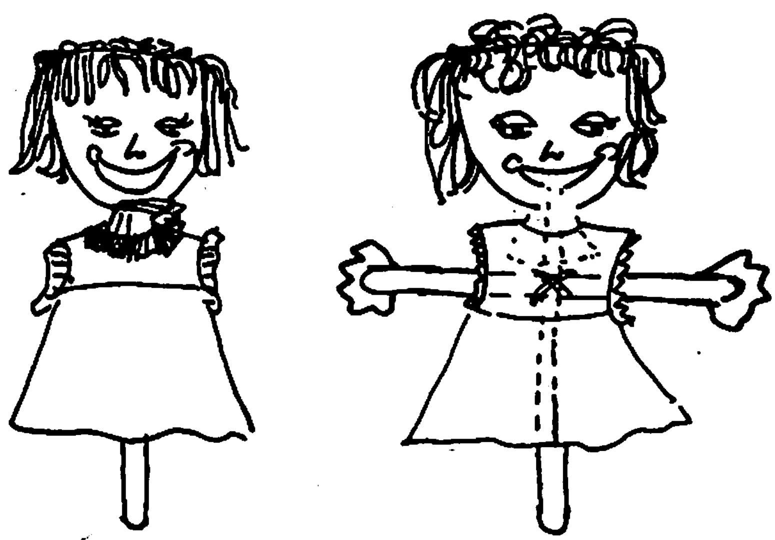
4. इस सिर के आकार पर आँख, नाक, मुँह की आकृतियाँ बनाओ। ये आकृतियाँ रंगों से, या चाहो तो रंगीन कागज़ काटकर भी बना सकते हो।



5. ऊन से बाल बनाकर लगाओ।

6. रंगीन कागज़ से पोशाक (फ्रॉक या शर्ट-पेंट आदि) काटकर सिर के नीचे छड़ी पर चिपकाओ।

और तो तुम जितना सजाना चाहो सजा लो। पुतली तैयार है। इसी तरह अलग-अलग पात्रों की पुतलियाँ बनाकर पुतली का नाटक तैयार करो।





चकमक समाचार

बच्चों का जमावड़ा

पलासी और लकड़ानी म.प्र. के देवास ज़िले के गाँव हैं। यहाँ बच्चों के ऐसे ठिए हैं जिन्हें तुम चकमक क्लब के नाम से जानते हो। इसी क्लब में पिछले दिनों 150 बच्चों ने विभिन्न गतिविधियाँ कीं। एकलव्य के खातेगाँव केन्द्र की मदद से हुए इस जमावड़े में तीन दिन बच्चों ने विज्ञान के प्रयोग, मिट्टी के खिलौने,





पत्तियों से चित्र, मैदानी खेल, कागज़ से खिलौने जैसी कई गतिविधियाँ कीं। जमावड़े के आखिरी दिन गाँव के लोगों ने बच्चों की बनाई चीज़ों को देखा और सराहा।

⊙ **रपट : योगेश मालवीय, हरणगाँव, म.प्र.**

विश्व पुस्तक मेला

इस महीने की **14 से 22 तारीख को दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला** लगेगा। जगह तो वही **प्रगति मैदान** रहेगी। इसके भारी-भरकमपन का अंदाज़ा तुम इसी से लगा सकते हो कि पिछली बार इस मेले में दुनिया के 23 देशों से किताबें आईं थीं। और किताबों के थोड़े न बहुत 1645 स्टॉल लगे थे। इस बार भी तमाम किताबें होंगी। एकलव्य की किताबों का स्टॉल भी वहाँ होगा – **हॉल नम्बर 13 में स्टॉल नम्बर 208** – तुम आओगे....! चलो इस बहाने तुमसे मुलाकात तो होगी!

पढ़ाई लड़ाई साथ-साथ

16 से 21 जनवरी तक **विश्व सामाजिक मंच** नाम से एक बड़ा आयोजन मुम्बई में हुआ। इसमें दुनिया के 140 देशों के एक लाख से भी ज़्यादा लोग शामिल हुए। दुनिया भर से आए लोगों ने अपनी समस्याओं को रखा। चर्चा, सेमिनार, कार्यशाला, रैली व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा लोगों ने अपनी बात कही। इनमें बच्चों के मुद्दे भी प्रमुख थे।



मध्यप्रदेश के बच्चे भी इस आयोजन में शामिल हुए। प्रमुख रूप से आधारशिला स्कूल तथा रेवा जीवनशालाओं में पढ़ाई करने वाले बच्चों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की। इन बच्चों का नारा था - पढ़ाई लड़ाई साथ-साथ। जीवनशालाओं के बच्चों ने आयोजन स्थल पर रैली निकालकर बड़े बाँधों का विरोध किया। रोज़ी-रोटी के अधिकार और सभी के लिए शिक्षा जैसे मुद्दों के लिए जीवनशालाओं के बच्चों ने इस मंच से आवाज़ उठाई। आधारशिला स्कूल के बच्चों ने यहाँ एक नाटक 'ग्लोबल विलेज' खेला। इस नाटक में बड़ी-बड़ी कम्पनियों द्वारा लोगों को सपने दिखाकर लूटने की सच्चाई बताने की कोशिश की। लोगों के बुनियादी हकों की माँग बच्चों ने नाटक के द्वारा प्रस्तुत की।

⊙ रपट : शिवनारायण गौर

बच्चों ने परखा पानी

उदयपुर राजस्थान का एक मशहूर झील-शहर है। विद्या भवन शिक्षा केन्द्र की ओर से इसी शहर के छह स्कूलों के तकरीबन 300 बच्चों ने पीने के पानी की जाँच करने की ठानी है। इस पूरे कार्यक्रम में क्लीन इण्डिया, नई दिल्ली ने भी सहयोग दिया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों द्वारा पर्यावरण





से जुड़े विभिन्न मुद्दों व उनसे जुड़ी समस्याओं को समाज के सामने लाना है। पानी की जाँच के लिए बच्चों को एक किट दिया गया है। इस किट की मदद से बच्चे पानी में शामिल विभिन्न तत्वों की मात्रा का पता करते हैं। और इसी से पता चलता है कि पानी पीने लायक है या नहीं।

⊙ रपट : शरद पारीक, उदयपुर, राजस्थान



खेल समाचार

शतरंज

विश्व के नम्बर तीन विश्वनाथन आनंद ने कोरस शतरंज चैम्पियनशिप जीत ली है। चैम्पियनशिप के आखिरी राउण्ड में उन्होंने हॉलैण्ड के इवान सोकोलोव को हराया।

टेनिस

ऑस्ट्रेलियन ओपन टेनिस टूर्नामेण्ट में पुरूषों का एकल खिताब रोजर फेडरर ने जीत लिया है। उन्होंने मरात साफिन को हराया। यह उनका दूसरा ग्रैण्ड स्लेम खिताब है। हालाँकि साफिन ने रोडिक और अगासी जैसे खिलाड़ियों को हराया था। पर फायनल में वे उस रंगत में नज़र नहीं आए। ऑस्ट्रेलियन ओपन के मिश्रित युगल मुकाबले में हमारे लिएण्डर पेस और मार्टिना नवरातिलोवा की जोड़ी फायनल में हार गई। नवरातिलोवा अब तक नौ मिश्रित मुकाबले जीत चुकी हैं।

क्रिकेट

खेलों की दुनिया में इस वक्त टेनिस के साथ- साथ क्रिकेट का भी जोर है। क्रिकेट में भारत, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड की टीमें त्रिकोणीय श्रृंखला खेल रही हैं। भारत और ऑस्ट्रेलिया की टीमों का फायनल में पहुँचना तो तय ही माना जा रहा था। वे फायनल में पहुँच भी गईं। हाँ पर ज़िम्बाब्वे कई बार जीत के पास पहुँची। दो बार तो बस जीतते-जीतते रह गई। खैर! अब भारत और ऑस्ट्रेलिया की टीमें तीन मैच खेलेंगी। जो टीम दो मैच जीतेगी, वो खिताब जीतेगी। अब देखते हैं कि तीन मैचों की ज़रूरत पड़ती है या नहीं!



उधर टेस्ट श्रृंखला में हार के बाद पहले एक दिवसीय मैच में दक्षिण अफ्रीका ने 263 रन बनाए। और वेस्ट इण्डीज़ की टीम 54 रनों पर ही ढेर हो गई। ⊙⊙⊙

प्याज की शॉल

एच. एस. राधा

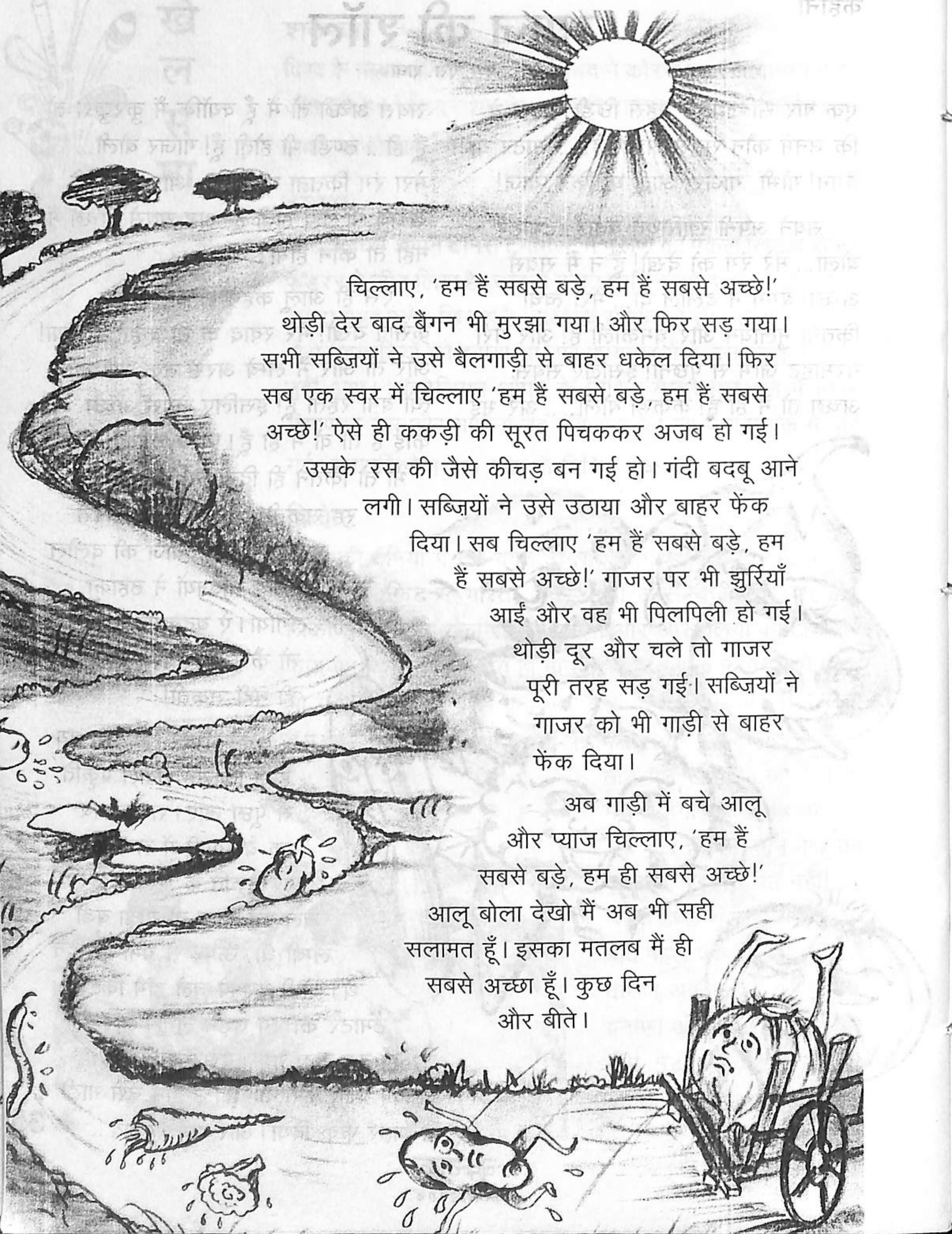
एक बार सब्ज़ियों में बहस छिड़ी। बहस ये कि उनमें कौन सबसे अच्छा है.....टमाटर या बैंगन! गोभी, गाजर, आलू या फिर प्याज!

सबने अपनी खासियतें बताईं। टमाटर बोला... मेरे रंग को देखो! हूँ न मैं सबसे अच्छा! बैंगन ने दलील दी... मेरी त्वचा कितनी मुलायम और चमकीली है! और मेरी नरमाहट जीभ से पूछना! इसलिए सबसे अच्छा तो मैं ही हूँ! ककड़ी बोली..... अरे भई सबसे अच्छी तो मैं हूँ क्योंकि मैं कुरकुरी तो हूँ ही... ठण्डी भी होती हूँ! गाजर बोली... मेरा रंग कितना प्यारा है... और मैं जल्दी खराब भी नहीं होती हूँ, अब सबसे अच्छी मैं नहीं तो कौन होगा?

ऐसे ही आलू कहने लगा ..... मेरा कसाव देखो! मेरे स्वाद के तो कहने ही क्या! और तो और मैं लम्बे अरसे तक ज्यों का त्यों बना रहता हूँ! इसलिए सबसे अच्छा कोई है तो वो मैं ही हूँ। प्याज चहकी..... मैं भी तो कितने ही दिन ज्यों की त्यों बनी रह सकती हूँ.... इसलिए सबसे अच्छी तो मैं हूँ! प्याज की दलील पर सब सब्ज़ियों ने ठहाका लगाया। ऐ बदबूदार प्याज! तू तो कैसे भी सबसे अच्छी हो ही नहीं सकती!



काफी देर बाद यह तय हुआ कि यह सवाल प्रकृति से पूछा जाए। सबके सब एक बैलगाड़ी में लद गए। और प्रकृति के घर की तरफ चल पड़े। एक तो यात्रा बड़ी लम्बी थी, ऊपर से गर्मी के दिन थे। थोड़ी दूर ही चले होंगे कि टमाटर का रंग उड़ने लगा। और उसका रस सूख गया। दूसरी सब्ज़ियाँ उसकी बदबू कैसे सहतीं। उन्होंने उसे गाड़ी से बाहर फेंक दिया। और सब के सब



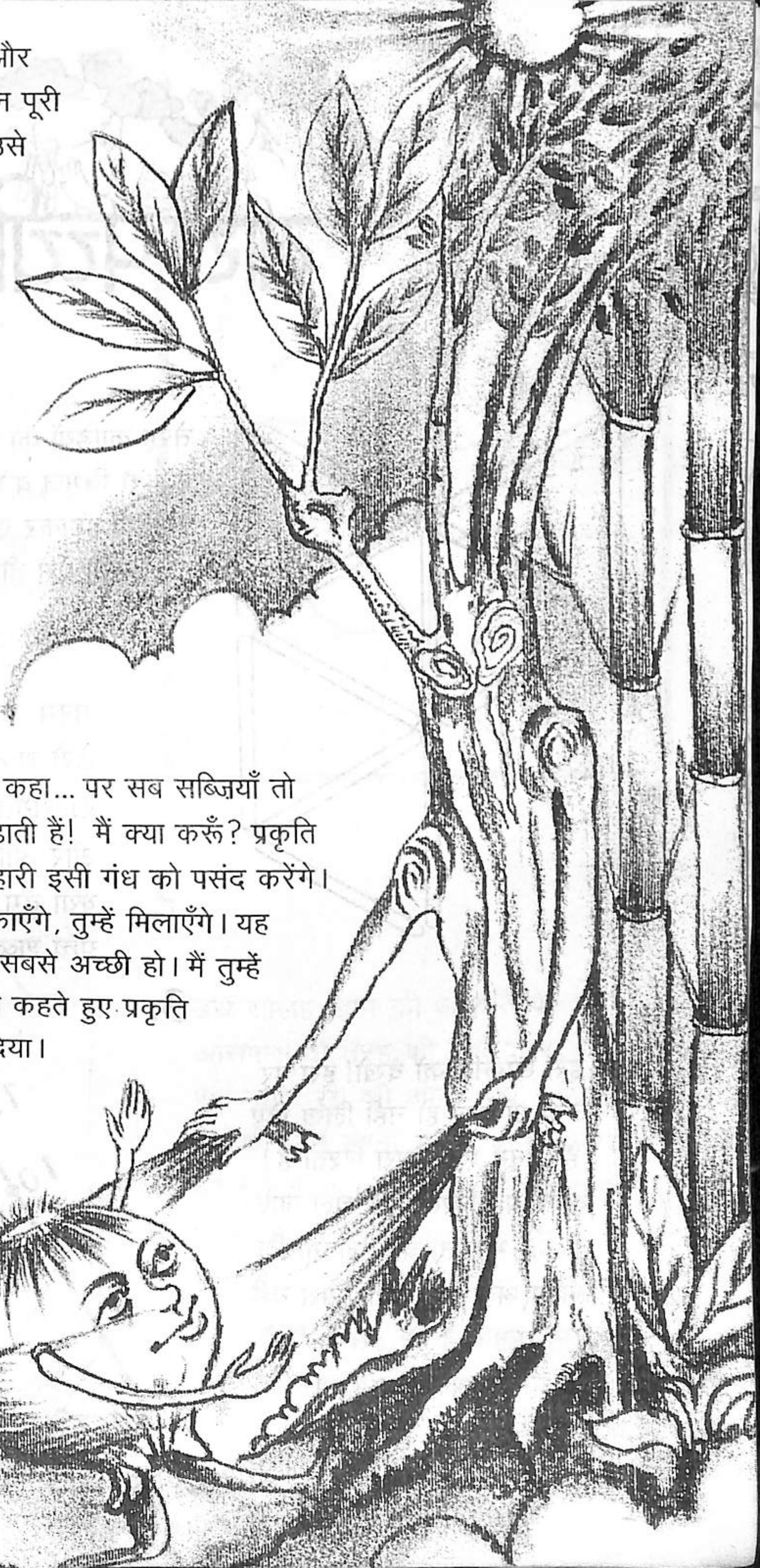
चिल्लाए, 'हम हैं सबसे बड़े, हम हैं सबसे अच्छे!' थोड़ी देर बाद बैंगन भी मुरझा गया। और फिर सड़ गया। सभी सब्ज़ियों ने उसे बैलगाड़ी से बाहर धकेल दिया। फिर सब एक स्वर में चिल्लाए 'हम हैं सबसे बड़े, हम हैं सबसे अच्छे!' ऐसे ही ककड़ी की सूरत पिचककर अजब हो गई। उसके रस की जैसे कीचड़ बन गई हो। गंदी बदबू आने लगी। सब्ज़ियों ने उसे उठाया और बाहर फेंक दिया। सब चिल्लाए 'हम हैं सबसे बड़े, हम हैं सबसे अच्छे!' गाजर पर भी झुर्रियाँ आईं और वह भी पिलपिली हो गई। थोड़ी दूर और चले तो गाजर पूरी तरह सड़ गई। सब्ज़ियों ने गाजर को भी गाड़ी से बाहर फेंक दिया।

अब गाड़ी में बचे आलू और प्याज चिल्लाए, 'हम हैं सबसे बड़े, हम ही सबसे अच्छे!' आलू बोला देखो मैं अब भी सही सलामत हूँ। इसका मतलब मैं ही सबसे अच्छा हूँ। कुछ दिन और बीते।

आलू भी सिकुड़ने लगा। और सिकुड़ते-सिकुड़ते एक दिन पूरी तरह सड़ गया। प्याज ने उसे बाहर फेंक दिया। गाड़ी में प्याज ही रह गई थी।

प्याज प्रकृति के घर पहुँची। प्रकृति ने प्याज की खातिर की। और उसकी कहानी भी सुनी। प्याज ने बताया कि बस वही है जो अब भी सही सलामत बची है। क्या मैं ही सबसे अच्छी नहीं हूँ? प्याज बोली।

प्रकृति ने कहा हाँ तुम ही सबसे अच्छी हो! प्याज ने उदास होकर कहा... पर सब सब्जियाँ तो मुझे बदबूदार कहकर चिढ़ाती हैं! मैं क्या करूँ? प्रकृति बोली ... आज से सब तुम्हारी इसी गंध को पसंद करेंगे। जब भी वो कोई सब्ज़ी पकाएँगे, तुम्हें मिलाएँगे। यह सब इसलिए, क्योंकि तुम सबसे अच्छी हो। मैं तुम्हें एक रेशमी शॉल दूँगी। यह कहते हुए प्रकृति ने प्याज को शॉल ओढ़ा दिया। आज भी हर प्याज पर वो रेशमी शॉल मिलता है। और आज तक हम हर सब्ज़ी में स्वाद के लिए प्याज डालते हैं।

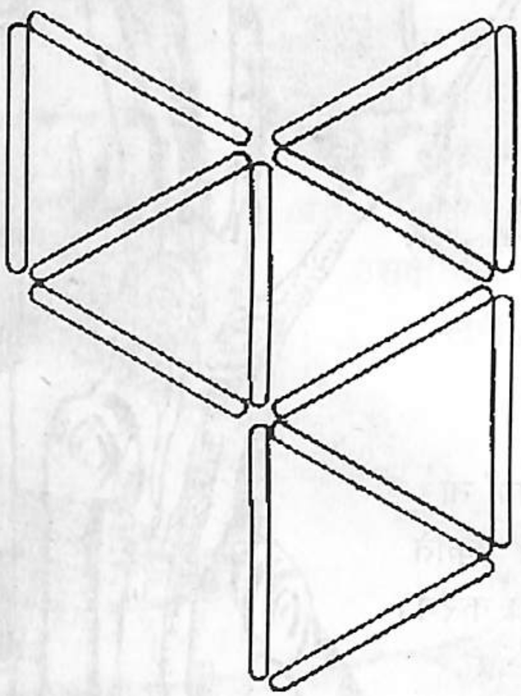


● चित्र : अशोक चंचल



माथापच्ची

1.



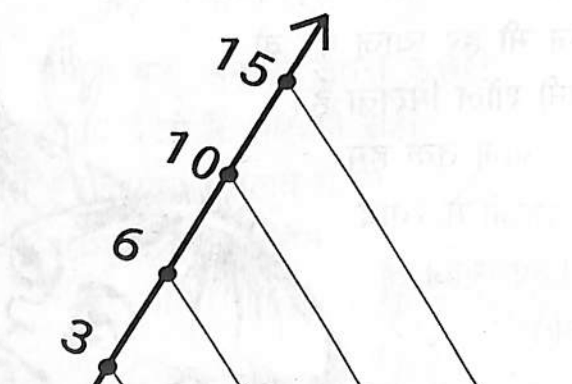
तेरह काड़ियों को मिलाकर यहाँ छह बिल्कुल एक-से त्रिभुज बने हैं। क्या तुम सिर्फ तीन काड़ियाँ हटाकर एक ऐसी आकृति बना सकते हो, जिसमें ऐसे तीन त्रिभुज रहें?

2.

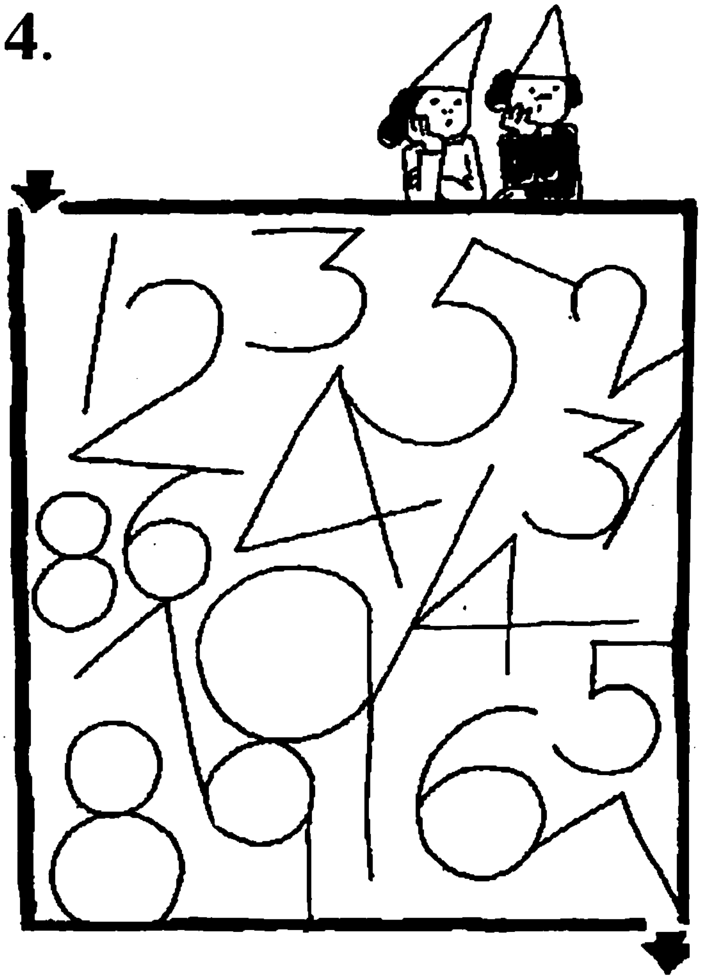
मरम, जलज, सरस, रबर .... ढेरों शब्द होंगे ऐसे! क्या खासियत है इनमें? इनके पहले और आखिरी शब्द एक ही हैं। क्या तुम इसी खासियत वाले पाँच शब्द और ढूँढ सकते हो?

3.

इस आकृति को देखो! इस पर लिखे अंक यूँ ही नहीं लिख दिए हैं, इनमें एक खास रिश्ता है। अगर यह रिश्ता पता चल जाए तो यह भी पता चल जाएगा कि अगला अंक क्या होगा। बस यही तुम्हें बताना है कि इस कड़ी में अगला अंक क्या होगा?

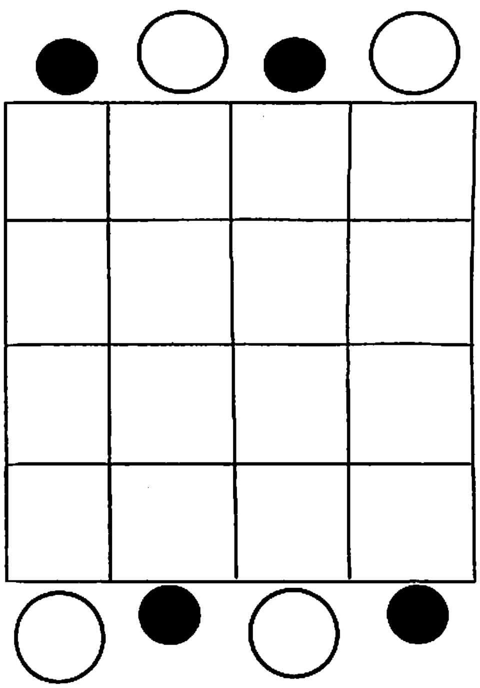


4.



इन दो बच्चों को अंकों के बीच से होकर दूसरी तरफ निकलना है। कुछ अंक उन्हें परेशान करना चाहते थे। और इसीलिए एक दूसरे से सटकर खड़े हो गए। फिर भी कुछ रास्ते ऐसे रह गए, जिनसे ये दोनों उस तरफ जा सकते हैं। क्या तुम्हारी नज़र उस रास्ते पर पड़ी?

5.



इस सोलह खाने की आकृति के आसपास दो तरह की गोटियाँ रखी हैं। एक काले रंग की और दूसरे सफेद रंग की। इन खानों में इन दोनों गोटियों को इस तरकीब से रखना है कि एक लाइन में दो काली या दो सफेद गोटियाँ न रहें। चाहे कोई आड़े से देखे या खड़े से, चाहे तिरछे। क्या तुम इस तरह से गोटियाँ जमा सकते हो?

खोज खबर

मकड़ी

यदि आप अपने चारों ओर नज़र दौड़ाएँ तो हर कहीं रेशम के जाले दिख जाएँगे। जंगल, खेत, बगीचे की बागड़, घर के कोनों में, हर कहीं रेशमी जाले और उनमें उलझे हुए जीवों के खोल। हो सकता है कि घर में ये जाले गंदगी का अहसास कराते हों। लेकिन क्या आपको पता है कि ये जाले कौन बुनता है? आप कहेंगे कि अजी इतना सरल सवाल भी मत कीजिए कि सामने वाले को जवाब देने में हँसी आ जाए! तो ठीक है, इन जालों को बुनने वाली है मकड़ी! यदि मधुमक्खी छत्ता बनाती है, दीमक बांबी बनाती है, पक्षी घोंसला बनाते हैं तो मकड़ी अपने ही शरीर से रेशम का निर्माण कर खूबसूरत जाला बुनती है।

क्या और भी कोई जीव है जो रेशम बना सकता है? उपलब्ध जानकारी के अनुसार जंतु-जगत में वयस्क अवस्था में रेशम पैदा करने वाले जीव केवल मकड़ी है। हाँ, कीटों में कुछ किस्में अपने जीवनचक्र की शंखी (प्यूपा) अवस्था में रेशम का खोल ओढ़ लेते हैं।

मकड़ी की बात दोबारा शुरू करने से पहले एक और दिलचस्प उदाहरण देखते हैं रेशम पैदा करने वाले कीट का। हम बात कर रहे हैं पेड़ों पर रहने वाले लाल रंग के चींटे की। अंग्रेज़ी में इसको वीवर एंट के नाम से जाना जाता है। ये चींटे झुण्ड के झुण्ड पेड़ों पर देखे जा सकते हैं और पत्तों की मदद से घोंसले बनाते हैं। घरौंदा बनाने के लिए ज़रूरी रेशम के लिए ये लार्वा को औज़ार के रूप में उपयोग करते हैं। दरअसल रेशम बनाने की क्षमता अण्डों से निकले लार्वा में ही होती है। यह क्षमता वयस्क अवस्था में खत्म हो जाती है। तो मज़दूर चींटियाँ अपने मुँह में लार्वा को पकड़ लेती हैं। इस दौरान कुछ अन्य मज़दूर चींटियाँ पत्तों को सटाकर रखती हैं। अब लार्वा वाली मज़दूर चींटियाँ लार्वा को इन पत्तों पर उसी तरह से घुमाती हैं जैसे हम गोंद लगी उँगली कागज़ पर फिराते हैं। इस प्रकार रेशम की मदद से चिपकाकर एक घोंसला बनाया जाता है जिसमें लार्वा पल-बढ़कर वयस्क बनते हैं।

चलिए, हम फिर से लौटते हैं मकड़ियों पर। बात स्पष्ट है कि वयस्क कीटों में रेशम बनाने की क्षमता खत्म हो जाती है। और मकड़ी तो कीट प्रजाति की है ही नहीं। वह एकमात्र ऐसी जीव है जो वयस्क अवस्था में भी रेशम बनाने की क्षमता रखती है। मकड़ी रेशम का उपयोग अनेक कामों में करती है। एक बुनियादी काम तो है अपने अण्डों की सुरक्षा। मादा मकड़ी अण्डों के चारों ओर रेशम लपेटकर उन्हें सुरक्षित कर देती है। खासकर ठण्ड के दिनों में झाड़ियों में मकड़ियों के ककून खूब देखे जा सकते हैं। शिकार को पकड़ने जैसे कामों के लिए भी जाला मददगार होता है।

मकड़ी जो जाला बुनती है वो कारीगरी का अद्‌भुत नमूना कहा जा सकता है। मकड़ी के पेट में रेशम ग्रंथियों में रेशम का निर्माण होता है। यह धागा बनाने वाले यंत्र के माध्यम से बाहर निकलता है। रेशम के इस धागे में मज़बूती और लचीलापन काफी होता है। जो रेशम का धागा हमको देखने पर एक-सा लगता है वास्तव में वह अनेक महीन रेशों से बना होता है। अंदाज़ा लगा सकते हो कि सबसे महीन धागे की मोटाई सिर्फ 0.00003 मि.मी. होती है।

- के. आर. शर्मा



कुछ कीट अपने जीवनचक्र की शंखी (प्यूपा) अवस्था में रेशम का खोल ओढ़ लेते हैं। रेशम केन्द्रों में भी रेशम के प्यूपा से रेशम प्राप्त किया जाता है।



मकड़ी का जाला यानी कारीगरी का अद्भुत नमूना। रेशम का एक-एक धागा वास्तव में अनेक महीन रेशों से बना होता है।



पेड़ों पर रहने वाले लाल रंग के चींटे। इनके कई नाम हैं मसलन दूध मकोड़ी, बरबूटा आदि। ये चींटे पत्तों को रेशम से जोड़कर घोंसले बनाते हैं।



ठण्ड के दिनों में दिखने वाला मकड़ी का एक ककून। इसमें अण्डे सुरक्षित रखे जाते हैं।

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003



मनोज, सातवीं, हिमरनी, हरदा, म.प्र.

रेक्स डी. रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना